

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 11, अंक - 10, सितंबर 2023 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarathi@gmail.com

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार

5 सितम्बर, 2023 / भाद्रपद 14, 1945

विज्ञान भवन, नई दिल्ली
Vigyan Bhavan, New Delhi



**गुरु की ऊर्जा सूर्य-सी, अम्बर-सा विस्तार
गुरु की महिमा से बड़ा, नहीं कहीं आकार**

जब अँधियारा घेर ले शिक्षक बनता आस

आदर करते जो सदा, ईश गुरु को मान ।
सदा सफलता का उन्हें, मिलता है वरदान ॥

शिक्षक से बढ़कर नहीं, इस में दुनिया में खास ।
जब अँधियारा घेर ले, शिक्षक बनता आस ॥

छोटे बालक भी भरे, ऊँची बहुत उड़ान ।
गुरुवर देते हैं उन्हें, जब शिक्षा का ज्ञान ॥

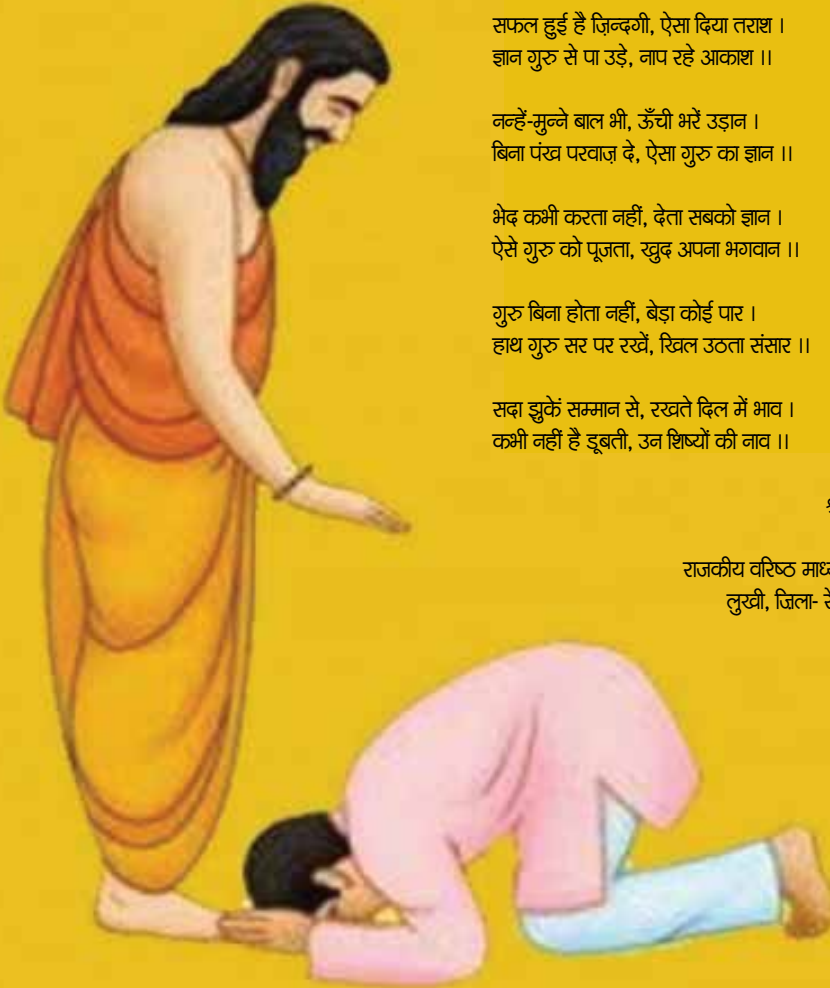
सफल हुई है ज़िन्दगी, ऐसा दिया तराश ।
ज्ञान गुरु से पा उड़े, नाप रहे आकाश ॥

नन्हें-मुन्ने बाल भी, ऊँची भरे उड़ान ।
बिना पंख परवाज़ दे, ऐसा गुरु का ज्ञान ॥

भेद कभी करता नहीं, देता सबको ज्ञान ।
ऐसे गुरु को पूजता, खुद अपना भगवान ॥

गुरु बिना होता नहीं, बेड़ा कोई पार ।
हाथ गुरु सर पर रखें, खिल उठता संसार ॥

सदा झुके सम्मान से, रखते दिल में भाव ।
कभी नहीं है डूबती, उन शिष्यों की नाव ॥



श्रीभगवान बच्चा
प्रवक्ता अंग्रेज़ी
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
लुखी, जिला- रेवाड़ी, हरियाणा



शिक्षा सारथी

सितंबर 2023

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कैचर पाल
स्कूल शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
सुधीर राजपाल
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. अंशुज सिंह
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डॉ. आर.एस. दिल्ली
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सतपाल शर्मा
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, वार्षिक: 150 रुपये

Published & Printed by Sunita Devi on behalf of President, Shiksha Lok Society-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I, New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

गुरु का सदसान्निध्य ही,
जग में है उपकार।
प्रस्तर को क्षण-क्षण गढ़े,
मूरत हो तैयार।

- | | |
|--|----|
| » शिक्षकों में बच्चे के प्रति संवेदनशीलता हो : द्रौपदी मुर्मू | 5 |
| » प्रेरणादायक सपनों को गढ़ने में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका : पीएम मोदी | 7 |
| » विज्ञान अध्यापक सत्यपाल सिंह को राष्ट्रीय शिक्षक-पुरस्कार | 8 |
| » व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका : दत्तात्रेय | 10 |
| » साँझी सभा | 20 |
| » ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिऑर्डर संकेत, लक्षण, चुनौतियाँ और अवसर | 22 |
| » स्काउटिंग हमें बेहतरीन इन्सान बनाती है: डॉ. मनीराम शर्मा | 24 |
| » पेंसिल स्केच में जान डाल देता है सुमित | 25 |
| » खेल-खेल में विज्ञान | 28 |
| » हिंदी है जन-जन की भाषा | 30 |
| » Multilingualism in NEP-2020 | 32 |
| » Janmashtami: Celebrating the Birth of Lord Krishna | 36 |
| » Ganesh Chaturthi: The Festival of Lord Ganesha | 38 |
| » The Edge of Tomorrow | 39 |
| » Over the Rainbow | 40 |
| » Top 10 Benefits of Reading for All Ages | 44 |
| » 52 Yards in a Box | 45 |
| » Enlighten the greatness hidden inside you... | 46 |
| » Visit to Agastya Foundation, Kuppam, Bangalore | 47 |
| » Amazing Facts | 48 |
| » General Knowledge | 49 |

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।



अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया । चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

हमारे देश में सितंबर का महीना वर्षा की समाप्ति पर सुहावनी शरद ऋतु के आगमन और उसके स्वागत का महीना तो होता ही है, 5 सितंबर को शिक्षक-दिवस और 14 सितंबर को हिंदी-दिवस के मनाए जाने के कारण यह शिक्षा, भाषाई संस्कृति और राष्ट्रीय गौरव के अहसास का महीना भी होता है।

इस समय हमारा संदर्भ शिक्षक-दिवस का है। 5 सितंबर का दिन राष्ट्र ने अपने शिक्षकों को समर्पित कर रखा है। यह दिन भारतीय दर्शन के महान अध्येता एवं उत्कृष्ट चिंतक हमारे पहले उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का जन्मदिन है। मगर वे इन सबसे पहले अपने आपको शिक्षक मानते थे और अपनी इसी मान्यता को सिद्ध करने के लिए उन्होंने अपने जन्मदिन को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाए जाने की स्वीकृति दी।

इस अवसर पर राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षकों को सम्मानित करते समय माननीया राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने अपने उद्बोधन में कुछ ऐसी बातें कहीं हैं, जिन्हें स्मरण रखना व व्यवहार में लाना हर शिक्षक के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं को समझना और उन क्षमताओं को विकसित करने में बच्चे की मदद करना शिक्षकों का कर्तव्य है। बच्चे की मदद करने के लिए, शिक्षकों में बच्चे के प्रति संवेदनशीलता का होना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों का शिक्षकों के साथ जीवन भर का अटूट नाता बन जाता है। माता-पिता, परिवारजनों तथा मित्रों के अलावा हर व्यक्ति को अपने शिक्षक ही याद रहते हैं। शिक्षकों से जो सलाहना मिलती है, प्रोत्साहन मिलता है अथवा दंड मिलता है, बच्चों को सब कुछ याद रहता है। यदि उनके सुधार की भावना से उन्हें दंडित किया जाता है तो समय के साथ बच्चों को इसका अहसास हो जाता है। इसलिए बच्चों को प्यार करना, उन्हें ज्ञान देने से अधिक जरूरी है।

माननीया राष्ट्रपति का एक-एक शब्द शिक्षकों के लिए प्रेरणाओं से भरा था। अगर आप शिक्षक-दिवस के अवसर पर उनके उद्बोधन को सुनने से वंचित रह गये थे, तब भी निराश होने की आवश्यकता नहीं। 'शिक्षा सारथी' के प्रस्तुत अंक में उसे सम्मिलित किया गया है। केवल इतना ही नहीं, इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी ने पुरस्कार विजेता शिक्षकों से बातचीत करते हुए जो संदेश दिया है, उसे भी आप इस अंक में पढ़ पाएंगे।

आपकी चहेती पत्रिका 'शिक्षा सारथी' का शिक्षक दिवस पर केंद्रित यह अंक आपको कैसा लगा, अपनी राय अवश्य दीजिएगा, प्रतीक्षा रहेगी।



शिक्षकों में बच्चे के प्रति संवेदनशीलता हो : द्रौपदी मुर्मू

शिक्षक-दिवस के अवसर पर माननीया राष्ट्रपति ने शिक्षकों को किया सम्मानित, अपने संबोधन से किया प्रेरित



महान शिक्षाविद्, असाधारण शिक्षक और भारत के पूर्व राष्ट्रपति, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की आज जयंती मनाई जा रही है। वे चाहते थे कि उनके जन्मदिन को 'शिक्षक-दिवस' के रूप में मनाया जाए। उस श्रेष्ठ विचारक और शिक्षक की पावन स्मृति को मैं सादर नमन करती हूँ।

आज 'शिक्षक-दिवस' के अवसर पर राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किए गए सभी शिक्षकों को मैं हार्दिक बधाई देती हूँ।

मैं समझती हूँ कि आज के दिन, विशेष रूप से, हर व्यक्ति को अपने विद्यार्थी जीवन की याद आती है और अपने शिक्षक भी याद आते हैं। मैं सभी देशवासियों की ओर से निष्ठान शिक्षकों के प्रति आदर व्यक्त करती हूँ।

आज के दिन मुझे अपने आदरणीय शिक्षक तो याद आते ही हैं, वे बच्चे भी याद आते हैं जिन्हें मैंने ओडिशा के रायरंगपुर में श्री ऑरोबिंदो इंटीग्रल स्कूल में पढ़ाया था। उन बच्चों के प्यार को मैं अपने जीवन की सबसे बड़ी

उपलब्धियों में शामिल करती हूँ।

किसी के भी जीवन में आरंभिक शिक्षा का बुनियादी महत्त्व होता है। अनेक शिक्षाविदों द्वारा बच्चों के संतुलित विकास के लिए धी-एच फॉर्मूले का उल्लेख किया जाता है। इनमें पहला 'एच' है हार्ट, दूसरा 'एच' है हैड और तीसरा 'एच' है हैंड। हार्ट या हृदय का संबंध संवेदनशीलता, मानवीय-मूल्यों, चरित्र-बल और नैतिकता से है। हैड या मस्तिष्क का संबंध मानसिक विकास, तर्क-शक्ति तथा पठन-पाठन से है। हैंड या हाथ का संबंध हस्त-कौशल तथा शारीरिक श्रम के प्रति सम्मान से है। धी-एच पर आधारित इस प्रणाली का ही रूप महात्मा गांधी के शिक्षा संबंधी विचारों में पाया जाता है। इसे वे बच्चे के हाथों का, दिमाग का और आत्मा का विकास कहते थे। ऐसे समग्र विकास पर जोर देने से ही बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता है।

मेरा मानना है कि हृदय का विकास अर्थात् चरित्र-बल और नैतिकता का विकास सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।

जैसे किसी मकान की मजबूती उसकी नींव के मजबूत होने पर आधारित होती है, उसी तरह जीवन को सार्थक बनाने के लिए चरित्र-बल की आवश्यकता होती है। चरित्र-बल का निर्माण बच्चों की आरंभिक शिक्षा के दौरान शुरू हो जाता है।

श्रम, कौशल एवं उद्यम के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए इस वर्ष कौशल विकास और उद्यमशीलता के क्षेत्रों में योगदान देने वाले शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया है। साथ ही, उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्यापन करने वाले शिक्षकों को भी पुरस्कृत किया गया है। मेरा ध्यान इस बात पर गया कि पूरे देश के स्कूलों में शिक्षिकाओं की संख्या 51 प्रतिशत से अधिक है जबकि आज के पुरस्कार विजेताओं में उनकी संख्या 32 प्रतिशत है। उच्च शिक्षण संस्थानों में पुरस्कृत शिक्षिकाओं की संख्या केवल 23 प्रतिशत है जबकि उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार उन संस्थानों में महिला अध्यापिकाओं की कुल संख्या लगभग 43 प्रतिशत है। अध्यापन कार्य में महिलाओं की भागीदारी





को देखते हुए मैं चाहूँगी कि राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले शिक्षकों में महिलाओं की संख्या में वृद्धि हो। छात्राओं और अध्यापिकाओं को प्रोत्साहित करना महिला सशक्तीकरण के लिए बहुत जरूरी है।

उपस्थित शिक्षक-गण! आप सब ही वास्तव में बच्चों के भविष्य का निर्माण करते हैं। इस प्रकार, आप सब राष्ट्र के भविष्य का भी निर्माण करते हैं। राष्ट्र-निर्माता के रूप में आप सब के महत्त्व को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है। शिक्षकों के प्रति समुचित सम्मान के भाव को बढ़ाने के लिए इस नीति में अनेक प्रावधान किए गए हैं और उन पर कार्य भी किया जा रहा है। शिक्षकों की भर्ती और नियुक्ति से लेकर, उनके continuous professional development तथा career management and progression के लिए सुविचारित व्यवस्था की गई है। शिक्षकों के शिक्षण के प्रति भी नए दृष्टिकोण के साथ विचार किया गया है।

हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं को समझना और उन क्षमताओं को विकसित करने में बच्चे की मदद करना शिक्षकों का भी कर्तव्य है और अभिभावकों का भी। बच्चे की मदद करने के लिए, शिक्षकों में बच्चे के प्रति संवेदनशीलता का होना आवश्यक है। शिक्षक स्वयं भी माता-पिता होते हैं। कोई भी माता-पिता यह नहीं चाहते कि उनके बच्चे

को मात्र एक समूह के सदस्य के रूप में देखा जाए। हर माता-पिता यह चाहते हैं कि उनके बच्चे पर विशेष ध्यान दिया जाए और उनके साथ प्रेम का व्यवहार किया जाए। माता-पिता बड़े विश्वास के साथ अपने बच्चों को अध्यापकों की देख-रेख में सौंपते हैं। एक साथ एक कक्षा के 40-50 बच्चों में प्यार बाँटने का अवसर मिलना बड़े सौभाग्य की बात होती है। यदि कोई शिक्षक इस सुखद अवसर को कठिनाई समझेंगे तो ऐसे शिक्षक भी परेशान होंगे और बच्चों का नुकसान तो होगा ही।

माता-पिता, परिवारजनों तथा मित्रों के अलावा हर व्यक्ति को अपने शिक्षक ही याद रहते हैं। शिक्षकों से जो सराहना मिलती है, प्रोत्साहन मिलता है, अथवा दंड

मिलता है, बच्चों को सब कुछ याद रहता है। यदि उनके सुधार की भावना से उन्हें दंडित किया जाता है तो समय के साथ बच्चों को इसका अहसास हो जाता है। इसलिए, मैं मानती हूँ कि बच्चों को प्यार करना, उन्हें ज्ञान देने से अधिक जरूरी है।

देवियों और सज्जनों! राष्ट्रीय शिक्षा नीति में एक मजबूत और जीवंत शिक्षा प्रणाली को विकसित करने पर जोर दिया गया है। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार माना गया है। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में शिक्षकों की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।

हमारी शिक्षा नीति भारतीय संस्कारों और गौरव से जुड़ने को प्राथमिकता देती है। भारत की प्राचीन तथा आधुनिक संस्कृति, ज्ञान प्रणालियों और परम्पराओं से प्रेरणा प्राप्त करना भी हमारी शिक्षा नीति का स्पष्ट सुझाव है। हमारे शिक्षक और विद्यार्थी चरक, सुश्रुत तथा आर्यभट्ट से लेकर पोखरण और चंद्रयान-3 तक की उपलब्धियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करें, उनसे प्रेरणा लें तथा बड़ी सोच के साथ राष्ट्र के उज्वल भविष्य के लिए कार्य करें। हमारे विद्यार्थी और शिक्षक मिलकर कर्तव्य काल के दौरान भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में तेजी से आगे ले जाएंगे, यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

शिक्षक दिवस के अवसर पर आप सभी को शुभकामनाएँ देते हुए, मैं अपनी वाणी को विराम देती हूँ। धन्यवाद! जय हिन्द! जय भारत!





प्रेरणादायक सपनों को गढ़ने में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका : पीएम मोदी



शिक्षक-दिवस की पूर्व संध्या पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रीय शिक्षक-पुरस्कार 2023 के विजेताओं के साथ बातचीत की। बातचीत में 75 पुरस्कार विजेताओं ने भाग लिया। इन विजेताओं में स्कूलों के 50 शिक्षक, उच्चशिक्षा संस्थानों के 13 शिक्षक और कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय के 12 शिक्षक शामिल थे। पुरस्कार विजेताओं के साथ पीएम आवास पर हुए संवाद के दौरान शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान भी मौजूद थे।

बच्चों को प्रेरित करें शिक्षक

प्रधानमंत्री ने देश के युवा दिमागों को विकसित करने में शिक्षकों के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने अच्छे शिक्षकों के महत्व और देश की नियति को आकार देने में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने बच्चों को जमीनी स्तर पर उपलब्धि हासिल करने वालों की सफलता के बारे में शिक्षित करके प्रेरित करने के महत्व पर जोर दिया। प्रधानमंत्री ने हमारी स्थानीय विरासत और इतिहास पर गर्व करने की बात की और शिक्षकों से छात्रों को अपने क्षेत्र के इतिहास और संस्कृति के बारे में जानने के लिए प्रेरित करने का आग्रह किया। देश में विविधता की ताकत पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने शिक्षकों से अपने स्कूलों में देश के विभिन्न हिस्सों की संस्कृति और विविधता का जश्न मनाने का अनुरोध किया।

युवाओं को कुशल बनाने पर की चर्चा-

चंद्रयान-3 की हालिया सफलता पर चर्चा करते हुए प्रधानमंत्री ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बारे में छात्रों में

जिज्ञासा को प्रोत्साहित करने के महत्व को रेखांकित किया, क्योंकि 21वीं सदी प्रौद्योगिकी संचालित सदी है। उन्होंने युवाओं को कुशल बनाने और उन्हें भविष्य के लिए तैयार करने के महत्व के बारे में भी बात की। मिशन लाइफ के बारे में बात करते हुए प्रधानमंत्री ने उपयोग और फेंक संस्कृति के विपरीत रीसाइक्लिंग के महत्व पर चर्चा की। कई शिक्षकों ने प्रधानमंत्री को अपने स्कूलों में होने वाले स्वच्छता कार्यक्रमों के बारे में भी जानकारी दी। इसके अलावा प्रधानमंत्री ने शिक्षकों को अपने पूरे करियर में लगातार सीखने और अपने कौशल को उन्नत करने की सलाह दी।

उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षक-पुरस्कार का उद्देश्य देश के कुछ बेहतरीन शिक्षकों के अनूठे योगदान का जश्न मनाना और उन शिक्षकों को सम्मानित करना है, जिन्होंने अपनी प्रतिबद्धता से न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया है, बल्कि अपने छात्रों के जीवन को भी समृद्ध बनाया है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष, पुरस्कार का दायरा बढ़ा दिया गया है, जिसमें पहले स्कूलों की शिक्षा और साक्षरता विभाग द्वारा चयनित शिक्षकों को शामिल किया गया था, अब इसमें उच्च शिक्षा विभाग और कौशल विकास मंत्रालय द्वारा चयनित शिक्षकों को भी शामिल किया गया है।

प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' (ट्विटर) पर जारी एक पोस्ट में कहा- 'शिक्षक हमारे भविष्य और प्रेरणादायक सपनों को गढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक-दिवस पर हम उनके अटूट समर्पण

और समाज पर उनके प्रभाव के लिए उन्हें सलाम करते हैं।'

प्रधानमंत्री जी से भेंट : एक सुखद स्वप्न साकार होने जैसी अनुभूति-

प्रदेश के अध्यापक सत्यपाल भी उन अध्यापकों में शामिल थे जिन से पीएम रूबरू हो रहे थे। सत्यपाल बताते हैं कि प्रधानमंत्री जी ने अध्यापकों को अपने शैक्षणिक अनुभवों से परिचित करवाया एवं अपने गुरुजन से अब तक के संबंधों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि उनके शिक्षक आज तक भी उन्हें पत्र लिखते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि आप सभी अध्यापकों का चयन पारदर्शिता से हुआ है और यही पारदर्शिता पद्मश्री जैसे बड़े पुरस्कारों में भी लागू है। अब जो पुरस्कार दिए जाते हैं वे धरातल से जुड़े हुए समाज सेवा करने वाले योग्य व्यक्तियों को दिए जाते हैं। इससे पुरस्कार की गरिमा में और वृद्धि हुई है। उन्होंने तकनीकी ज्ञान पर भी अध्यापकों से चर्चा की। उन्होंने यह भी कहा कि मैं बच्चे को जन्म देती है, किंतु अध्यापक बच्चों की जिंदगी बनाता एवं सँवारता है। इसके साथ-साथ उन्होंने समय का सदुपयोग करने की प्रेरणा भी दी। माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपने अनुभवों से अध्यापकों में एक नई ऊर्जा का संचार किया। माननीय प्रधानमंत्री के साथ बिताए व क्षण उनके लिए अमूल्य एवं अकल्पनीय थे। अध्यापकों का एक सपना साकार हो रहा था।

डॉ. प्रदीप राठौर

drpradeepprathore@gmail.com





विज्ञान अध्यापक सत्यपाल सिंह को राष्ट्रीय शिक्षक-पुरस्कार

पुरस्कार में मिली 50,000 रु. की राशि अभावग्रस्त विद्यार्थियों पर करेंगे खर्च



राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बुडौली, खंड खोल, जिला रेवाड़ी में कार्यरत सत्यपाल सिंह विज्ञान अध्यापक को शिक्षा मंत्रालय भारत-सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्रदान किया गया। इन्हें यह पुरस्कार भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के हाथों 5 सितंबर 2023 को विज्ञान-भवन नई दिल्ली में प्राप्त हुआ। इससे पूर्व इस कर्मठ अध्यापक को 2021 में राज्य शिक्षक पुरस्कार से नवाजा जा चुका है। इतना ही नहीं इन्हें प्रोफेसर सीएनआर राव एजुकेशन फाउंडेशन द्वारा 28 जून 2023 को वर्ष 2022 का सीएनआर राव एजुकेशन फाउंडेशन आउटस्टैंडिंग साइंस टीचर अवार्ड भी प्रदान किया गया था। गौरतलब है कि यह भी काफी प्रतिष्ठित सम्मान माना जाता है। यह सम्मान इन्हें भारत रत्न से सम्मानित व प्रधानमंत्री के राष्ट्रीय वैज्ञानिक सलाहकार

परिषद के पूर्व अध्यक्ष महान वैज्ञानिक चिंतामणि नागेश राव द्वारा बेंगलुरु में दिया गया था।

बनाई जिले की सर्वश्रेष्ठ प्रयोगशाला-

सत्यपाल सिंह की प्रथम नियुक्ति रेवाड़ी जिले के राजकीय उच्च विद्यालय टॉकड़ी में विज्ञान अध्यापक के रूप में 28 मार्च 2002 को हुई थी। उस समय विद्यालय की विज्ञान प्रयोगशाला जर्जर अवस्था में थी। इन्होंने विज्ञान प्रयोगशाला को अपने स्तर पर श्रेष्ठ प्रयोगशाला बनाते हुए अतिरिक्त कक्षाएँ लगाकर शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाया। 2 अगस्त, 2005 को इनका स्थानांतरण राजकीय उच्च विद्यालय टॉकड़ी से राजकीय माध्यमिक विद्यालय प्राणपुरा गोपालपुरा जिला रेवाड़ी में हो गया। इस विद्यालय में 2 अगस्त, 2005 से 7 सितंबर, 2017 तक के अपने कार्यकाल में इन्होंने अपने प्रयासों से विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाई व अपने प्रयासों से जिले की सर्वश्रेष्ठ विज्ञान प्रयोगशाला बनाई। आज भी यह प्रयोगशाला माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की सर्वश्रेष्ठ प्रयोगशालाओं में से एक है।

अपने स्वयं से दीवारों पर विज्ञान गतिविधियों के चित्र-

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय डहीना जिला रेवाड़ी में इन्होंने अपने स्वयं पर स्वयं चित्र बनाकर विज्ञान एवं गणित की प्रयोगशाला तैयार की जो पूरी तरह शून्य एवं कम खर्च उपकरणों से सुसज्जित है। इसके अतिरिक्त विद्यालय की दीवारों पर भी इन्होंने स्वयं के स्वयं से विज्ञान के चित्र बना रखे हैं। इन्होंने जिले के कुछ अन्य विद्यालयों की प्रयोगशालाओं में सुधार करने में अध्यापकों की मदद की व स्वयं भी चित्र बनाए। अहीर कॉलेज रेवाड़ी जहाँ इन्होंने बीएससी ग्रेजुएशन की पढ़ाई की, उस कॉलेज की जूलॉजी लैब में भी जून की छुट्टियों में 2022 में इन्होंने विज्ञान आधारित चित्र बनाए। इन्होंने 'शिक्षा सारथी' को बताया कि केंब्रिज विश्वविद्यालय लंदन से आए प्रोफेसर ने इनकी विज्ञान एवं गणितीय प्रयोगशालाओं का निरीक्षण किया एवं एक विज्ञान आधारित लेख केंब्रिज विश्वविद्यालय लंदन में एक प्रोफेसर द्वारा प्रकाशित किया गया। आईआईटी दिल्ली के INYAS फाउंडेशन की वर्कशॉप में भाग लेने के लिए इनको आमंत्रित किया गया व भारत के आईआईटी संस्थानों के पीएचडी स्कॉलर की ऑनलाइन रिसर्च प्रतियोगिताओं के ज्युरी मेंबर के रूप में नियुक्त किया।

छात्रवृत्ति परीक्षा की तैयारी-

इन्होंने प्रतिवर्ष विज्ञान प्रदर्शनी व राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में राज्य स्तर पर विद्यार्थियों सहित 10 से अधिक बार भाग लिया। विद्यालय समय के अतिरिक्त तीन से चार घंटे सायंकालीन कक्षाएँ लगाकर विद्यार्थियों की एनएमएमएस छात्रवृत्ति परीक्षा की तैयारी करवाई। इनके विद्यालय के 45 से अधिक विद्यार्थियों ने एनएमएमएस छात्रवृत्ति प्राप्त की। इस आधार पर माध्यमिक स्तर पर यह विद्यालय जिले में प्रथम स्थान पर है।

शैक्षिक लेखन, यू-ट्यूब चैनल व वीडियो-

'शिक्षा सारथी' के साथ बातचीत के दौरान इन्होंने बताया कि इन्होंने पाँच पुस्तकें एससीईआरटी गुरुग्राम में लिखीं। इनकी लिखी हुई कक्षा तीसरी, चौथी एवं पाँचवीं की इरोरवा ईवीएस किताबें वर्तमान में पूरे हरियाणा के सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थी





पढ़ रहे हैं। इन्होंने कक्षा छठी से आठवीं के विद्यार्थियों के लिए विज्ञान मॉड्यूल्स की दो किताबें लिखीं, जो विद्यार्थियों के साथ-साथ अध्यापकों के लिए भी लाभदायक सिद्ध हो रही हैं। इन्होंने एससीईआरटी, गुरुग्राम में दीक्षा एप पर विषयवस्तु आधारित वीडियो बनाए जो अध्यापक व विद्यार्थियों को शिक्षण-अधिगम में काफी लाभदायक सिद्ध हो रहे हैं। एससीईआरटी में विज्ञान एक्टिविटी आधारित मॉडल मेकिंग वीडियो सबसे अधिक इनके वीडियो चयनित हुए। कोरोना काल में इन्होंने विद्यार्थियों के शिक्षण से संबंधित यूट्यूब चैनल बनाया जिसमें कक्षा छठी, सातवीं एवं आठवीं के विज्ञान आधारित वीडियो व एक्टिविटी आधारित वीडियो बनाए। कोरोनाकाल में स्वयं हस्तलिखित नोट्स बनाकर विद्यार्थियों के घरों तक पहुँचाए। क्रिएटिव एंड क्रिटिकल थिंकिंग सीसीटी के कंटेंट तैयार किए। इन्होंने अध्यापकों के लिए चॉकलिट एप का राज्य स्तरीय कंटेंट भी एससीईआरटी गुरुग्राम में तैयार किया। इसके अलावा एससीईआरटी गुरुग्राम में राज्य स्तर पर सक्षम अभ्यास प्रश्न-पत्र तैयार किए जिनका लाभ हरियाणा के विद्यार्थियों को हुआ। इन्होंने कोरोना काल लॉकडाउन में पूरे वर्ष विज्ञान आधारित कक्षा छठी, सातवीं आठवीं की ऑनलाइन विचित्र बनाकर पूरे हरियाणा में अध्यापकों व विद्यार्थियों के लिए भेजी जिससे विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि हुई। विज्ञान विषय को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एससीईआरटी गुरुग्राम द्वारा संचालित 'हरियाणा साइंस प्रमोशन प्रोग्राम' के अंतर्गत मास्टर-ट्रेनर के रूप में विज्ञान विषय के प्रति विद्यार्थियों की रुचि बढ़ाने में मदद की।

सांस्कृतिक गतिविधियों में भी कमाया नाम-

इतना ही नहीं, इन्होंने अध्यापकों के लिए विशेष कला एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम 'रंगोत्सव' एवं इंद्रधनुष में लगातार दो वर्ष 2019-20 तथा 2020-21 में 9 में से 9 प्रतियोगिताओं में भाग लेकर हरियाणा में कीर्तिमान बनाया जिसमें प्रथम वर्ष में जिला स्तर पर 6 पुरस्कार एवं द्वितीय वर्ष में पाँच पुरस्कार प्राप्त किए। 2021-22 में तीन प्रतियोगिताओं में राज्य स्तर तक भाग लेकर परंपरागत खेल एवं खेलौने में प्रदेश स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। अपने विद्यालय के विद्यार्थियों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों, यथा-कला-उत्सव, एक भारत- श्रेष्ठ भारत, रंगोत्सव आदि में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

समाज-सेवा में रुचि-

सत्यपाल सिंह गॉव के सामाजिक कार्यों, स्वच्छता, जोहड़ सफाई, वृक्षारोपण एवं मंदिरों की मूर्तियों के प्रतिवर्ष पेंट करना आदि गतिविधियों में भी निरंतर भाग लेते रहे हैं। इन्होंने धूम्रपान का फेफड़ों पर दुष्प्रभाव, अंधविश्वास को मिटाने वाली कुरीतियों एवं मतदाता जागरूकता पर भी समाज को जागरूक करने हेतु वीडियो बना रखे हैं, जिनके माध्यम से ये समाज को जागरूक करते रहते हैं। गीता महोत्सव, राष्ट्रीय पर्व,



वृक्षारोपण, खेलकूद प्रतियोगिताओं, एसएमसी, पीटीएम व विद्यालय प्रबंधन के अन्य कार्यों में विद्यालय स्तर एवं जिला स्तर पर भाग लेते रहे हैं। साथ ही हेल्थ एंड वेलनेस के भी जिला स्तर पर कोऑर्डिनेटर व मास्टर ट्रेनर रह चुके हैं।

- शिक्षा सारथी डेस्क





व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका : दत्तात्रेय

93 शिक्षकों को किया सम्मानित, कहा- डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत

डॉ. प्रदीप राठौर



हरियाणा के माननीय राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित राज्य शिक्षक पुरस्कार समारोह में बतौर मुख्य

अतिथि शिरकत करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रदेश के 69 शिक्षकों को सम्मानित किया। समारोह का शुभारंभ उनके द्वारा देश के पूर्व राष्ट्रपति स्व. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए किया गया। इस अवसर पर हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष श्री ज्ञानचंद गुप्ता तथा स्कूल शिक्षा मंत्री कँवरपाल भी उपस्थित थे। समारोह में स्कूल शिक्षा विभाग तथा





राज्य शिक्षक-पुरस्कार- 2022



यूनिसेफ द्वारा पासपोर्ट टू अर्निंग (पी2ई) फॉर स्कूल्स लर्निंग लिटरेसी कार्यक्रम का बॉशर भी राज्यपाल द्वारा लांच किया गया।

इस अवसर पर राज्यपाल जी ने कहा कि वे स्वयं को शिक्षकों के बीच पाकर बेहद प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की 136वीं जयंती पर उन्होंने शिक्षक-वर्ग को हार्दिक शुभकामनायें दीं। उन्होंने इस बात को गौरव का विषय माना कि उनके कर-कर्मलों से 'राज्य शिक्षक पुरस्कार' के लिए चुने गये अध्यापक सम्मानित हुए।

उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति में गुरु को सबसे उच्च स्थान प्रदान किया गया है। गुरु की प्रासंगिकता हर देशकाल में थी, आज भी है और भविष्य में भी रहेगी। गुरु या शिक्षक केवल वर्तमान पीढ़ी का मार्गदर्शक नहीं है, अपितु भविष्य का राष्ट्र निर्माता एवं राष्ट्र का सूत्रधार भी है। अध्यापक की योग्यता पर ही देश का भविष्य निर्भर करता है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षकगण पूरी निष्ठा एवं समर्पण भाव से कार्य करें। श्रेष्ठ कार्य करने वाले अध्यापकों को सरकार द्वारा सम्मानित किया जाना उचित है। इसी के आधार पर राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक पुरस्कारों की व्यवस्था की गई है।

उन्होंने कहा कि शिक्षा ही अज्ञानता के अंधकार को दूर कर मनुष्य को एक सभ्य, अनुशासित एवं सफल नागरिक बनाने में अहम भूमिका निभाती है। अतः यह आवश्यक है कि सभी शिक्षित हों। स्वतन्त्रता प्राप्ति के

| क्रं. | शिक्षक का नाम | विद्यालय तथा जिले का नाम |
|-------|---------------------|---|
| 1 | प्रेम चन्द | प्रधानाचार्य, आरोही मॉवमा विद्यालय, झिरी (सिरसा) |
| 2 | राकेश बूरा | प्रधानाचार्य, रावमा विद्यालय, जाटल (पानीपत) |
| 3 | बलबीर सिंह | पीजीटी अंग्रेजी, रावमा विद्यालय, सोंगल (कैथल) |
| 4 | बबीता | पीजीटी अंग्रेजी, रावमा विद्यालय, रेवाड़ी (रेवाड़ी) |
| 5 | डॉ.सतबीर सिंह | पीजीटी हिन्दी, राउ विद्यालय, श्याम नगर (रेवाड़ी) |
| 6 | डॉ.सुदामा प्रसाद | पीजीटी हिन्दी, रामोंसंवमा विद्यालय, मटिन्दु (सोनीपत) |
| 7 | दलजीत सिंह | पीजीटी इतिहास, रावमा विद्यालय, बराह कलां (जौद) |
| 8 | कृष्ण दत्त | पीजीटी राजनीति शास्त्र, रावमा विद्यालय, सोंगल (कैथल) |
| 9 | सुशीला कुमारी | पीजीटी राजनीति शास्त्र, राकवमा विद्यालय, दाणी फोगाट (चरखीदादरी) |
| 10 | रमेश कुमार | पीजीटी अर्थशास्त्र, रावमा विद्यालय, हंगोला (पंचकूला) |
| 11 | पवन कुमार | पीजीटी संस्कृत, रावमा विद्यालय, कायला (भिवानी) |
| 12 | पवन सिंह | पीजीटी भौतिकी, रावमा विद्यालय, गढ़ी उजाले खां (सोनीपत) |
| 13 | सुशील कुमार | पीजीटी रसायन विज्ञान, रावमा विद्यालय, कैलरम (कैथल) |
| 14 | जगजीत सिंह | मौलिक विद्यालय मुख्याध्यापक, रावमा विद्यालय, मसानी (रेवाड़ी) |
| 15 | जयबीर सिंह | मौलिक विद्यालय मुख्याध्यापक, रावमा विद्यालय, सैमान (रोहतक) |
| 16 | सविता रानी | मौलिक विद्यालय मुख्याध्यापक, राउ विद्यालय, छोछी (झज्जर) |
| 17 | नीलम शर्मा | मौलिक विद्यालय मुख्याध्यापिका, रामा विद्यालय, बाँध (पानीपत) |
| 18 | डॉ. वीरेंद्र सिंह | टीजीटी अंग्रेजी, रामा विद्यालय, चाँदावास (रेवाड़ी) |
| 19 | डॉ. जितेन्द्र कुमार | टीजीटी अंग्रेजी, राकवमा विद्यालय गहली (महेन्द्रगढ़) |
| 20 | राजेश कुमार | टीजीटी गणित, राकवमा विद्यालय, बरौदा (सोनीपत) |
| 21 | सुनील सिंह | टीजीटी गणित, रावमा विद्यालय, धान्दलान (झज्जर) |
| 22 | चन्द्रहास | टीजीटी संस्कृत, राकवमा विद्यालय, कासन (गुरुग्राम) |
| 23 | मीना कुमारी | सी.एण्ड वी. संस्कृत, राकवमा विद्यालय, मॉडल टाउन, पानीपत (पानीपत) |
| 24 | अरविन्द मान | कला अध्यापक, चौ.जागराम रावमा विद्यालय, गिगनाऊ (भिवानी) |
| 25 | किरण बाला | कला अध्यापिका, राउ विद्यालय कमेद (चरखीदादरी) |
| 26 | अंजु वर्मा | सी.एण्ड वी.आर्ट एण्ड क्राफ्ट, राउ विद्यालय, बुर्ज कोटियाँ (पंचकूला) |
| 27 | प्रदीप कुमार | प्राथमिक विद्यालय मुख्य शिक्षक, राप्रा पाठशाला, डोडवा (करनाल) |
| 28 | रवीन्द्र कुमार | प्राथमिक विद्यालय मुख्य शिक्षक, राप्रा पाठशाला, खोजकीपुर (पानीपत) |
| 29 | विक्रम | प्रा.अ, राप्रा पाठशाला, सफ्रीदों (रविदास बस्ती) (जीन्द) |
| 30 | मन्दीप | प्रा.अ, राप्रा पाठशाला, भुथला (रेवाड़ी) |
| 31 | मनोज कुमार | प्रा.अ, राप्रा पाठशाला, मदनहेड़ी (हिसार) |
| 32 | ओमबीर सिंह | प्रा.अ, राप्रा पाठशाला, सुखराली (गुरुग्राम) |
| 33 | हरपाल | प्रा.अ, राकप्रा पाठशाला, काकडौली हुक्मी (चरखीदादरी) |
| 34 | सुधीर | प्रा.अ, राप्रा पाठशाला, कुण्डल (रेवाड़ी) |





भी अति-आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी इस बात पर विशेष बल दिया गया है। उन्होंने कहा कि उन्हें इस बात की खुशी है कि प्रदेश में एनएसक्यूएफ यानी 'नेशनल स्किल क्वालीफिकेशन फ्रेमवर्क' नामक योजना बेहतर ढंग से चलाई जा रही है। राज्य के 1186 विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा दी जा रही है। इस योजना के तहत 9वीं से 12वीं कक्षाओं के 1,96,028 विद्यार्थियों को नामांकित किया गया है। 50 राजकीय विद्यालयों में इनक्यूबेशन सेंटर्स की स्थापना, लगभग



बाद से इस दिशा में बहुत से प्रयत्न किए गए हैं। शिक्षा का अधिकार अधिनियम आते ही इस दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। लेकिन जब तक हर बच्चा विद्यालय में नहीं पहुँच जाता, तब तक उसके लिए इस अधिकार के कोई मायने नहीं हैं। हमें देखना चाहिए कि सभी को शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य प्राप्त करने में क्या-क्या बाधाएँ हैं और उनका निवारण कैसे किया जा सकता है। हम सब को सुनिश्चित करना है कि कोई भी बच्चा स्कूल से बाहर रहकर शिक्षा से वंचित न रहे। हालांकि हरियाणा में इस दिशा में काफी अच्छा काम हो रहा है। विद्यालय से बाहर रहने वाले विद्यार्थियों का सर्वेक्षण करा कर उन्हें

शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। प्रदेश में 1125 विशेष प्रशिक्षण केंद्र खोले गए हैं जिनमें 28,139 'आउट ऑफ स्कूल चिल्ड्रन' को छह महीनों का विशेष प्रशिक्षण देकर सामान्य स्कूलों में प्रवेश दिलाने की दिशा में काफी अच्छी कोशिश की गई है। ऐसे बच्चों के लिए 'कदम' नामक अध्ययन सामग्री की विशेष टूल किट बनाई गई है। इन प्रयासों के लिए उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री व शिक्षा मंत्री को बधाई दी।

उन्होंने कहा कि आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में शिक्षक का उत्तरदायित्व और भी बढ़ गया है। स्कूली शिक्षा के साथ-साथ रोजगारोन्मुख शिक्षा प्रदान की जानी





राज्य शिक्षक-पुरस्कार- 2023



45,000 विद्यार्थियों को निःशुल्क दूल्कट वितरित करना, विद्यार्थियों की रोजगार संबंधी काउंसलिंग शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाने की दिशा में यह अत्यंत सार्थक प्रयास हैं।

उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी चाहते थे कि भारत में तीन एच यानी हैड, हैंड और हार्ट की शिक्षा दी जाये। इन तीनों पर बल देने वाली शिक्षा ही सही शिक्षा हो सकती है। उन्होंने कहा कि डॉ. राधाकृष्णन समूचे विश्व को एक विद्यालय मानते थे। उनका मानना था कि शिक्षा के द्वारा



| क्र. | शिक्षकों के नाम | विद्यालय तथा जिले का नाम |
|------|----------------------|---|
| 1 | जगदीश कुमार | प्रधानाचार्य, रावमावि, नांगल तेजु (रेवाड़ी) |
| 2 | डॉ. पवन कुमार गुप्ता | प्रधानाचार्य, सार्थक रामोंसंवमावि, सैक्टर-12 ए, (पंचकूला) |
| 3 | भारती | प्रधानाचार्य, रावमावि, अकबरपुर बारौटा (सोनीपत) |
| 4 | खुशी राम | पीजीटी अंग्रेजी, रावमावि, मुंढड़ी (कैथल) |
| 5 | संगीता | पीजीटी अंग्रेजी, रावमावि, खारियाँ (सिरसा) |
| 6 | मनोज कुमार | पीजीटी हिन्दी, रावमावि, जहाजपुर, हिसार |
| 7 | विजय कुमार चावला | पीजीटी हिन्दी, आमोंवमावि, ग्योंग (कैथल) |
| 8 | रवीन्द्र सिंह | पीजीटी इतिहास, रावमावि, काबड़ी (पानीपत) |
| 9 | मुकेश यादव | पीजीटी राजनीति शास्त्र, रावमावि, पाल्हावास (रेवाड़ी) |
| 10 | राजेन्द्र कुमार | पीजीटी भूगोल, रावमावि, बगथला (रेवाड़ी) |
| 11 | विजय सिंह | पीजीटी गणित, रावमावि, काँवली (रेवाड़ी) |
| 12 | सविता हिल्लों | पीजीटी गणित, सार्थक रामोंसंवमावि, सैक्टर-12 ए, (पंचकूला) |
| 13 | सतीश कुमार | पीजीटी शारीरिक शिक्षा, रामोंसंवमावि, नलवा (हिसार) |
| 14 | रविता देवी | पीजीटी शारीरिक शिक्षा, राकवमावि, गोहाना (सोनीपत) |
| 15 | रणधीर सिंह | मौलिक विद्यालय मुख्य अध्यापक, रावमावि, महेश्वरी (रेवाड़ी) |
| 16 | यशपाल मलिक | मौलिक विद्यालय मुख्य अध्यापक, राउवि, कतलुपुर (सोनीपत) |
| 17 | सन्तोष कुमारी | मौलिक विद्यालय मुख्य अध्यापक, रामावि, इन्द्रगढ़ (रोहतक) |
| 18 | शिव कुमार | टीजीटी सामाजिक अध्ययन, राउवि, करेला झमौला (जौड़) |
| 19 | सीमा देवी | टीजीटी अंग्रेजी, रामावि, रसलापुर (पानीपत) |
| 20 | कृष्ण कुमार | टीजीटी साईंस, रावमावि, नाहर (रेवाड़ी) |
| 21 | विनोद कुमार | सी.एण्ड वी. हिन्दी, राकवमावि, गोंदर (करनाल) |
| 22 | राम प्रसाद | सी.एण्ड वी. संस्कृत, रावमावि, भौंगरा (जीन्ड) |
| 23 | सरोज देवी | टीजीटी संस्कृत, शहीद धर्म सिंह रावमावि, लूखी (रेवाड़ी) |
| 24 | सुनीता देवी | कला अध्यापिका, रामोंसंवमावि, बोडिया कमालपुर (रेवाड़ी) |
| 25 | जय दीप | प्राथमिक विद्यालय मुख्य शिक्षक, राप्रा पाठशाला, नांगलखेड़ी (पानीपत) |
| 26 | कँवर भान | प्राथमिक विद्यालय मुख्य शिक्षक, राप्रा पाठशाला, कुड़ल (भिवानी) |
| 27 | पवन कुमार | प्राअ, राप्रापा, चुंगी-7 लोहारू (भिवानी) |
| 28 | कुलदीप सिंह | प्राअ, राप्रापा, रामगढ़ (कुरुक्षेत्र) |
| 29 | विनोद | प्राअ, राप्रापा, फिरोजपुर बांगर (सोनीपत) |
| 30 | जापान सिंह | प्राअ, राप्रापा, फरमाणा बादशाहपुर (रोहतक) |
| 31 | राकेश कुमार | प्राअ, राप्रापा, हड़ताड़ी (पानीपत) |
| 32 | सेवा सिंह | प्राअ, राप्रापा, धीर (फतेहाबाद) |
| 33 | पूनम रानी | प्राअ, राप्रापा, सुखराली (गुरुग्राम) |
| 34 | रेनिका मलिक | प्राअ, राप्रापा, ऊण (चरखीदादरी) |
| 35 | सीमा कुमारी | प्राअ, राप्रापा, पुलिस लाईन हिसार (हिसार) |





क्या दिया जाता है पुरस्कार में

| |
|--|
| प्रशस्ति-पत्र |
| एक लाख रुपए की नकद राशि |
| शॉल व रजत पदक |
| संपूर्ण सेवा-काल के लिए दो अग्रिम वेतन-वृद्धियाँ |

ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग हो सकता है।

उन्होंने कहा कि एक विद्यार्थी अपने जीवन में परिवर्तन लाने वाले शिक्षकों को कभी भूलता नहीं है। उन्होंने कहा कि वे भी अपने शिक्षकों को हमेशा याद करते रहते हैं। उन्होंने कहा कि आज मैं जिस भी पद पर हूँ, अपने शिक्षकों की बदौलत ही हूँ। इस अवसर पर उन्होंने अपने 96 वर्षीय भौतिकी के शिक्षक का भी स्मरण किया। उन्होंने कहा कि अध्यापक का अपना जीवन अनुशासित व आदर्शों से युक्त होना चाहिये। उसे पूरे मन से शिक्षण-कर्म के साथ जुड़ना चाहिये। अपने छात्रों के प्रति आत्मीयता का भाव होना चाहिए। अपने हर छात्र को उसके नाम से ही पुकारना चाहिये। कक्षा-कक्ष में उसका ध्यान मात्र पढ़ाने पर ही नहीं, बल्कि इस बात पर भी होना चाहिए कि जो पढ़ाया जा रहा है वह विद्यार्थियों के मस्तिष्क तक पहुँच पा रहा है या नहीं। उन्होंने कहा कि उन्होंने भी अपने जीवन में शिक्षण का कर्म किया है। उन्होंने आजीविका के लिए नहीं, बल्कि निःस्वार्थ भाव से निःशुल्क अभावहीन बच्चों को पढ़ाया है। उनमें से कई बच्चे जीवन में काफी सफल हुए हैं। यह देखकर उन्हें अपार प्रसन्नता होती है।

उन्होंने इस बात के लिए भी हर्ष व्यक्त किया कि

शिक्षक-दिवस के अवसर पर हरियाणा ने फाइनेंशियल लिटरेसी कार्यक्रम का आरंभ किया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यदि विद्यार्थी इस विषय में जागरूक होंगे तो देश से बेरोजगारी की समस्या काफी हद तक कम हो

सकती है। फाइनेंशियल लिटरेसी से भारत की पूरे विश्व के सामने एक खास पहचान बनेगी। गौरतलब है इस शिक्षक दिवस के अवसर पर राज्यपाल जी के द्वारा ही इस कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया था।





उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक गेम चेंजर साबित होगी। उन्होंने हरियाणा को इस बात के लिए बधाई दी कि वह इस शिक्षा नीति को पूरे देश से पहले 2025 में ही लागू करने जा रहा है। उन्होंने इस बात के लिए हर्ष जताया कि नई शिक्षा नीति में विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा मुहैया कराने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। उन्होंने कहा कि युवाओं को उनकी प्रतिभा के स्थान पर उनकी भाषा के आधार पर जज नहीं किया जाना चाहिये। मातृभाषा में पढ़ाई होने से भारत के युवा टेनेंट के साथ सही अर्थों में न्याय होगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. जगदेश कुमार किसी नामीगिरामी अंग्रेजी स्कूल से नहीं, बल्कि एक साधारण से गाँव से स्कूल से ही निकल कर आये हैं।

उन्होंने कहा कि जब वे ऐसे समाचार सुनते हैं कि तनाव के कारण किसी युवा ने आत्महत्या कर ली तो उन्हें बेहद दुःख होता है। एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों को मानसिक रूप से सबल भी बनाना है ताकि वे हर हताशा-निराशा का सामना भी कर पायें। उन्होंने कहा कि आज शिक्षण-कर्म काफी चुनौती भरा कार्य बन गया है। ज्ञान-विज्ञान व तकनीक में तेज़ गति से क्रांतिकारी परिवर्तन आने से अब अध्यापक को अपने ज्ञान को अद्यतन रखना पड़ता है। उसे निरंतर जिज्ञासु और अध्ययनशील रहना पड़ता है। परिवर्तन के इस दौर में विद्यार्थियों को भी इसके लिए मानसिक तौर पर तैयार करने की जरूरत है। इन सब के अलावा हम अपने सभी गुरुजन से उम्मीद



'वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम' का किया शुभारंभ

शिक्षक दिवस के अवसर पर राज्यपाल महोदय द्वारा 'वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम' का शुभारंभ किया गया। पासपोर्ट टू अर्निंग (पी2ई) यूनिसेफ और जेनेरेशन अनलिमिटेड की प्रमुख ई-लर्निंग पहल है जो युवाओं को 21वीं सदी के कौशल के साथ सशक्त बनाती है और उन्हें इंटरनेट, अप्रेंटिसशिप, उद्यमिता, नौकरी और सामाजिक प्रभाव जैसे प्रासंगिक अवसरों से जोड़ती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में विद्यार्थी को 21वीं सदी के कौशल प्रदान करने पर बल दिया गया है। उसी श्रृंखला में विभाग द्वारा 'यूनिसेफ' के साथ एमओयू किया गया है जिसमें 5 लाख विद्यार्थियों को फाइनेंशियल लिटरेसी प्रदान की जाएगी। यह विद्यार्थियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। उन्हें टेबलेट के माध्यम से ऑनलाइन कोर्स कराया जाएगा। यूनिसेफ और विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा के संयुक्त तत्वावधान में कराया जाने वाला यह कोर्स विद्यार्थियों को बचत, निवेश, बैंकिंग, ऋण, वित्तीय-योजना, बीमा, डिजिटल भुगतान और धन संबंधी अन्य मामलों की स्पष्ट समझ विकसित करने में मदद करेगा। इस कोर्स के पूरा होने के बाद विद्यार्थी विभिन्न बैंक खाते खोलने, अपने पैसे का बजट बनाने, भविष्य के लिए बचत की योजना बनाने और सरकारी वित्तीय योजनाओं में आवेदन करने में सक्षम बनेंगे। वे न केवल धन बचाना सीखेंगे, बल्कि उसे ग्रे करना, यानी बढ़ाना भी सीखेंगे। वे वित्तीय धोखाधड़ी, घोटालों आदि से भी परिचित होंगे। वे उनसे बचने व उनसे निपटने की जानकारी भी अर्जित करेंगे। यह कोर्स उन्हें आन्तरिक शक्ति प्रदान करेगा। यह डिजिटल इंडिया के सपने को धरातल पर लाने का सुखद प्रयास है। अपने उद्बोधन में माननीय राज्यपाल ने इस संबंध में विश्वास व्यक्त किया कि यदि विद्यार्थी इस विषय में जागरूक होंगे तो देश से बेरोजगारी की समस्या काफी हद तक कम हो सकती है। इस अवसर पर एक वृत्तचित्र के माध्यम से इस कार्यक्रम का परिचय, इसके उद्देश्यों आदि की जानकारी सभी दर्शकों तक पहुँचाई गई।



PASSPORT TO EARNING (P2E) PROGRAM LAUNCH

On the occasion of National Teacher's Day

5th September 2023

Inauguration by: **Shri Bandaru Dattatreya**
Hon'ble Governor of Haryana

Chaired by: **Shri Kanwar Pal Gurjar**
Hon'ble Education Minister, Haryana

Indradhanush Auditorium, Sector 5, Panchkula, Haryana

Contact: HaryanaP2E@gmail.com | **1800-309-4095**





करते हैं कि वे विद्यार्थियों को इस प्रकार शिक्षित-दीक्षित करें कि उनकी सभी प्रतिभाएँ और शक्तियाँ विकसित हों, क्योंकि शिक्षा का अर्थ केवल कुछ परीक्षाओं में बैठ कर कुछ डिग्रियाँ हासिल कर लेना नहीं है, अपितु एक बालक का संपूर्ण विकास करके उसे समाज का एक

संवेदनशील व जिम्मेदार नागरिक बनाना भी है। उन्होंने कहा कि हमारे अध्यापक शिक्षा के जरिये समाज में फैली कुत्तियों, रुढ़ियों व अंधविश्वासों को दूर करने में प्रयत्नशील बनें ताकि राष्ट्र वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ नव-निर्माण के पथ पर निरंतर अग्रसर होता रहे।

उन्होंने उम्मीद की कि गुरुजन विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करते हुए राष्ट्र के नव-निर्माण में अपनी प्रभावी भूमिका निभाएँगे ताकि उनके विद्यार्थी प्रदेश और देश को नई ऊँचाइयों पर लेकर जायें।





शिक्षक सच्चे अर्थों में राष्ट्र-निर्माता : ज्ञान चंद गुप्ता

इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष श्री ज्ञानचंद गुप्ता ने कहा कि शिक्षक देश के निर्माता होते हैं जो विद्यार्थियों को तराशते



समाज को एक नई दिशा देने का सार्थक प्रयास

वर्तमान विद्यालय में पदस्थापित होने के बाद मैंने देखा कि लोहारू शहर की झुग्गियों में रहने वाले बच्चे विद्यालय में नहीं जा रहे हैं। अतः मैंने शिक्षा के मौलिक अधिकार से वंचित इन बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने का निश्चय किया और इन बच्चों का नामांकन विद्यालय में करवाया। हमारे विद्यालय को जिला स्तर पर प्रधानमंत्री स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार वर्ष 2021 के लिए मिला है। एफएलएन में पहाड़ों की जिला स्तरीय बाल प्रतियोगिता से लेकर जिला भिवानी की रेडक्रॉस पेंटिंग प्रतियोगिताओं में भी विद्यालय के छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय का नाम रोशन किया है। 'रक्तदान', 'मतदाता जागरूकता अभियान', 'नकल उन्मूलन अभियान' आदि में भी महत्वपूर्ण योगदान देकर समाज को एक नई दिशा देने का सार्थक प्रयास मैंने किया है। मेरा मानना है कि यह गौरव पाने के बाद एक अध्यापक और नागरिक के रूप में मेरे कर्तव्य-पथ का क्षेत्र और बढ़ गया है।

पवन कुमार स्वामी
प्राथमिक अध्यापक

राज्य शिक्षक पुरस्कार विजेता (2023)
जीएमएसपीएस चुंगी-7 लोहारू, भिवानी

विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन

हमारे विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या 2012 में 1250 थी जो आज लगभग 1650 तक पहुँच चुकी है। विद्यालय का बोर्ड परीक्षा परिणाम 80-90 प्रतिशत रहता है। हर वर्ष बोर्ड में 20 से अधिक मेरिट और 5-7 विद्यार्थी विभिन्न अच्छे इंजीनियरिंग कॉलेज, मेडिकल कॉलेज व डिग्री कॉलेज आदि में अपनी जगह बनाने में सफल होते हैं। गत वर्ष विद्यालय की 12वीं कक्षा की छात्रा पायल ने बोर्ड परीक्षा परिणाम में सरकारी विद्यालयों में जिले में प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया। खेल-कूद प्रतियोगिताओं में हर वर्ष विद्यार्थियों ने नए कीर्तिमान स्थापित करते हुए जिला स्तर, राज्य स्तर, राष्ट्रीय स्तर व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक बार जीत का परचम लहराया है। सामुदायिक सहयोग से विद्यालय में अनेक विकास-कार्य कराये। हमारे विद्यालय को पीएमश्री का दर्जा मिला है।

भारती

राज्य शिक्षक पुरस्कार विजेता (2023)
प्रधानाचार्य रावमावि अकबरपुर बरोटा
जिला-सोनीपत





विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में योगदान

मैंने स्काउटिंग के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बांग्लादेश में भाग लिया व मेरे द्वारा प्रशिक्षित अनेक स्काउट राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न गतिविधियों में गए। परीक्षा परिणाम 5 वर्षों के दौरान व उससे पहले 100 प्रतिशत रहा है। शिक्षा के क्षेत्र के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण, स्कूल सौंदर्यकरण व अन्य राष्ट्रीय कार्यक्रमों में उपमंडल व जिला स्तर पर सहयोग किया। विद्यालय मुख्य-द्वार निर्माण में गाँमीणों का सहयोग प्राप्त किया। छात्रों ने एनएमएस, बुनियाद, सुपर-हैंड्रेड आदि क्षेत्रों में क्वालिफाई किया। छात्रों को नीट व इंजीनियरिंग आईआईटी में भी दाखिला मिला। शिक्षा के साथ-साथ स्कूल सौंदर्यकरण में भी विशेष भूमिका निभाई व अन्य सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। मैंने स्काउटिंग के क्षेत्र में 'मेडल ऑफ मेरिट' भी प्राप्त किया। मेरी नियुक्ति 1999 में बतौर प्राथमिक शिक्षक हुई थी। 2010 में पद्मश्री उपरांत सामाजिक अध्ययन अध्यापक पर वर्तमान में कार्यरत हूँ।

शिव कुमार

राज्य शिक्षक पुरस्कार विजेता (2023)

टीजीटी सामाजिक अध्ययन

राजकीय उच्च विद्यालय झमौला, जिला-जींद

हुए उन्हें राष्ट्र हित की दिशा में कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। उन्होंने मंच से राजाराम मोहन राय, पंडित मदन मोहन मालवीय, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तथा महान दार्शनिक श्री अरविंद का नाम लेते हुए कहा कि इन महानुभावों ने शिक्षा के स्तर को बढ़ाने में विशेष योगदान दिया। उन्होंने युवाओं का नशे से दूर रहने का भी आह्वान किया। उन्होंने कहा कि युवा किसी भी देश की रीढ़ की हड्डी के समान हैं और अगर युवा कमजोर होगा तो देश कमजोर होगा। उन्होंने कहा कि युवाओं को

यह संकल्प लेना होगा कि वे नशे से दूर रहेंगे। उन्होंने अध्यापकों से कहा कि वे युवाओं को सही दिशा प्रदान करने का संकल्प लें।

शिक्षक ही देश के भविष्य के वास्तविक निर्माता : कँवर पाल

शिक्षामंत्री जी ने अपने संबोधन में कहा कि वे शिक्षक-दिवस पर सम्मानित होने वाले सभी शिक्षकों के साथ-साथ प्रदेश के हर शिक्षक को शुभकामनायें देते हैं

जो शिक्षण के पावन कर्म से जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि इस अवसर पर हम बड़ी श्रद्धा के साथ डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी को याद करते हैं। उनका स्मरण केवल इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है कि वे देश के राष्ट्रपति बने, बल्कि इसलिए भी कि एक महान शिक्षक के साथ-साथ प्रभावी वक्ता व गंभीर दार्शनिक भी थे। शिक्षक के रूप में बिताए 40 वर्षों में उन्होंने अपने विद्यार्थियों के मन में एक सम्मानजनक छवि बनाई। उनकी व्याख्याएँ अत्यंत तर्कपूर्ण और उनकी अभिव्यक्ति बेहद प्रभावशाली होती थीं। वे जिस भी विषय को पढ़ाते थे, पहले स्वयं उसका गहन अध्ययन करते थे। दर्शन जैसे गंभीर विषय को भी अपनी खास शैली से सरल, सरस और रोचक बना देते थे। उन्होंने कहा कि अध्ययनशीलता की उनकी यह प्रवृत्ति तथा उनकी यह अध्यापन-शैली हर अध्यापक को सीखनी चाहिये। उन्होंने कहा कि जन्मदिन के अवसर पर हम उस महान विभूति को नमन करते हैं और उनके आदर्शों का अनुकरण करने का प्रयास करते हैं।

उन्होंने चाणक्य की उक्ति का स्मरण दिलाया कि शिक्षक कभी साधारण नहीं होता, प्रलय और निर्माण उसकी गोद में पलते हैं। उन्होंने कहा कि चाणक्य के उक्त वचन से शिक्षक की असाधारण विशेषता परिलक्षित होती है। एक बालक के भविष्य को वही सही रूपाकार प्रदान करता है। बालक उसे अपना आदर्श मानता है। उसके शिक्षण को नहीं, उसके हर क्रियाकलाप को सूक्ष्मता से निहारता है। माता-पिता की बात से भी ज्यादा शिक्षक की कही बात पर भरोसा करता है। इसलिए शिक्षक की भूमिका सदैव बड़ी महत्वपूर्ण रही है। सरकार भौतिक संसाधन उपलब्ध करा सकती है, लेकिन गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के साथ-साथ बच्चों के चरित्र का विकास करके उन्हें समाज में जिम्मेदार नागरिक बनाने का कर्म तो शिक्षक को ही करना होता है। बच्चों को संस्कारवाना बनाना अति आवश्यक है। इस कार्य के लिए कोई पाठ्यक्रम नहीं बनाया जाता। शिक्षक पाठ्यक्रम से ही नहीं, अपने आचार-विचार से भी बहुत कुछ सिखाता है। जब हम किसी का खूबसूरत घर देखते हैं तो हम उसकी प्रशंसा करते हुए बड़ी जल्दी यह भी पूछ बैठते हैं कि आर्किटेक्ट कौन था? जिस प्रकार कुशल आर्किटेक्ट भवन का निर्माण करता है, उसी प्रकार शिक्षक विद्यार्थी के भविष्य का निर्माण करता है। किसी सफल व्यक्ति का जिज्ञासु हो तो उसके शिक्षकों व शिक्षण-संस्थानों के नाम का उल्लेख भी होता है। उन्होंने कहा कि अध्यापन केवल एक 'नौकरी' नहीं है, अपितु बहुत ही गौरवपूर्ण कार्य है। अतीत में जायें तो शिक्षण कर्म में लगा व्यक्ति बहुत साधन-सम्पन्न नहीं होता था, लेकिन समाज में उसका सम्मान इतना अधिक था कि सम्राट भी उसके सम्मान में सिंहासन से उठ खड़ा होता था। उसे पता था कि यही भावी पीढ़ियों को सही दिशा देगा। आज भी हमें उसी प्रकार के सम्मान का हकदार बनना है। उन्होंने कहा कि उन्होंने अपने जीवन काल में शिक्षकों का ऐसा सम्मान स्वयं देखा है।





अपने स्कूली जीवन की घटना को याद करते हुए वे बताते हैं उनके गाँव में पाँचवीं तक का स्कूल था। वहाँ एक शिक्षक थे- गोपालानंद। हालांकि वे गाँव के किसी मसले में हस्तक्षेप नहीं करते थे, लेकिन उन्होंने अगर कोई बात कह दी तो सारा समाज यह सोचता था कि यह बात तो स्वीकार करनी ही होगी, क्योंकि यह मास्टर जी ने कही है। अपने कॉलेज के दिनों की याद करते हुए वे कहते हैं कि उनके कॉलेज के प्रधानाचार्य तिलकराज चड्ढा जी थे, वे स्वतंत्रता सेनानी भी रहे थे। जब वे घर से निकलते थे तो वे हर छोटे-बड़े को अभिवादन करते हुए जाते थे। विद्यार्थियों में इस बात की होड़ रहती थी कि उनके अभिवादन करने से पहले उन्हें अभिवादन करेंगे। सभी विद्यार्थियों के मन में उनके प्रति अपार श्रद्धा का भाव था। इसी प्रकार के भाव को आज भी सभी शिक्षकों ने बरकरार रखना है। इसके लिए शिक्षण को मात्र पेट भरने का व्यवसाय नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण का एक महान कार्य, एक पुनीत यज्ञ समझना होगा।

इस मौके पर माध्यमिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. अंशज सिंह ने आप हुए अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि विभाग शिक्षकों की 'क्षमता-निर्माण' पर विशेष बल दे रहा है। अध्यापकों को विशेष प्रशिक्षण कराये जा रहे हैं ताकि उन्हें शिक्षण की नवीन तकनीकों से परिचित कराकर उनके शिक्षण कौशल को और निखारा जा सके। विभाग की सदैव ये कोशिश रहती है कि अध्यापकों के सेवा संबंधी प्रशासनिक कार्य समयबद्ध

शिक्षण के साथ-साथ समाज-सेवा में रुचि

मुझ द्वारा किए गये प्रयासों से हर वर्ष विद्यालय में नामांकन वृद्धि हो रही है। विद्यार्थी अनेक खेल गतिविधियों में विभिन्न स्तरों पर भाग ले रहे हैं। विद्यालय मुख्यमंत्री सौंदर्यकरण पुरस्कार में जिले में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुका है। अनेक विद्यार्थी पढ़े भारत - बड़े भारत, एनएमएमएस आदि में श्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं। मैंने शिक्षण अधिगम एवं वर्तमान परिदृश्य विषय पर पुस्तक लिखी है। शिक्षण कार्य को प्रभावशाली बनाने के लिए नई-नई तकनीकों का प्रयोग किया है। समाज के लिए अनेक बार स्वतः-दान किया। ग्रामवासियों के सहयोग से विद्यालय के विकास के लिए लगभग 7-8 लाख रुपए विद्यालय में लगाए। कोरोना काल में दो गरीब बच्चों को अपनी नेक कमाई से दो स्मार्टफोन दिए ताकि उनकी पढ़ाई प्रभावित न हो। आसपास के विद्यालयों और अनेक धार्मिक स्थानों पर वृक्षारोपण का कार्य किया।

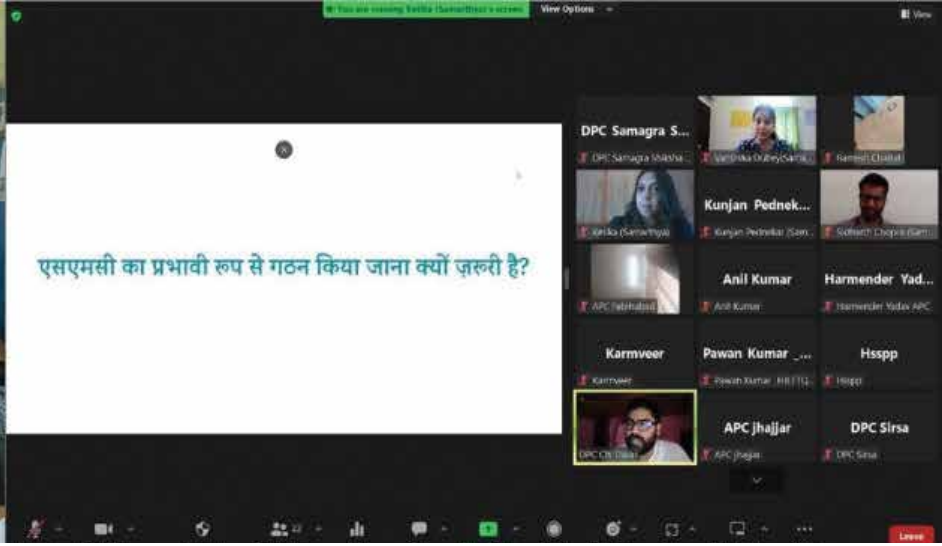
रणधीर सिंह
राज्य शिक्षक पुरस्कार विजेता (2023)
मौलिक मुख्याध्यापक
रावमावि महेश्वरी, जिला- रेवाड़ी, हरियाणा

दंग से पूरे हों। ऑनलाइन स्थानान्तरण नीति से बिल्कुल पारदर्शी ढंग से अध्यापकों के स्थानान्तरण किये गये हैं। एसीपी केस ऑनलाइन होने के कारण अब समयबद्ध ढंग से अध्यापकों को इनका लाभ मिल रहा है। अध्यापकों के विभिन्न वर्गों की पदोन्नति भी समयबद्ध ढंग से की जा रही है। राज्य शिक्षक पुरस्कारों के लिए शिक्षकों के चयन की व्यवस्था को भी पूरी तरह से पारदर्शी बनाया गया है। कुल मिलाकर ऐसे प्रयास किए जा रहे हैं कि शिक्षकों को निजी कार्यों के लिए कार्यालयों के चक्कर न काटने पड़ें। उनके देय लाभ उन्हें यथा समय मिलते रहें

और वे अपना पूरा ध्यान गुणवत्तापूर्ण शिक्षण में लगायें। कार्यक्रम के अंत में मौलिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. आरएस डिल्लों ने धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह में पंचकूला के मेयर श्री कुलभूषण गोयल, स्कूल शिक्षा विभाग के एसीएस श्री सुधीर राजपाल, माध्यमिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. अंशज सिंह, उपायुक्त श्री सुशील सारवान सहित कई अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे। प्रस्तुत पत्रिकाओं के लेखक द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया।

drpradeepathore@gmail.com





साँझी सभा

विद्यालयों में जन-भागीदारी से आयोजित होने वाला उत्सव

सोनाली वोहरा



संवाद और समुदाय द्वारा किये गए कार्य, दो ऐसे स्तंभ हैं जिनसे अक्सर समाज में

सुधार आता है। इस सुधार के लिए लोगों को एक साथ लाना एक महत्वपूर्ण कदम होता है। एक संस्था प्रभावी रूप से काम तभी करती है जब-जब उसमें हिस्सेदारी रखने वाले लोग भाग लें और एक साथ जिम्मेदारी उठाएँ। एक कंपनी जो अपने ग्राहकों और कर्मचारियों की आकांक्षाओं और चुनौतियों से दूर हो जाती है, उसकी सफल होने की संभावना कम हो जाती है। इसी तरह

एक विद्यालय जो अपने छात्रों, उनके माता-पिता, शिक्षकों और स्थानीय अधिकारियों की आकांक्षाओं और चुनौतियों से दूर हो जाता है, उसके भी सफल होने की संभावना कम हो जाती है।

शिक्षा के क्षेत्र में, शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई) की धारा-21 देश के प्रत्येक सरकारी विद्यालय में विद्यालय प्रबंधन समितियों यानी एसएमसी के गठन को अनिवार्य करके ऐसी साझेदारी का प्रावधान करती है। एसएमसी माता-पिता, छात्रों, शिक्षकों, अधिकारियों और स्थानीय सरकार के प्रतिनिधियों के लिए एक साथ आने और विद्यालय के विकास पर काम करने का एक मंच है। यदि हम विद्यालय को एक गाँव की तरह समझें, तो एसएमसी एक पंचायत के रूप में कार्य करती है।

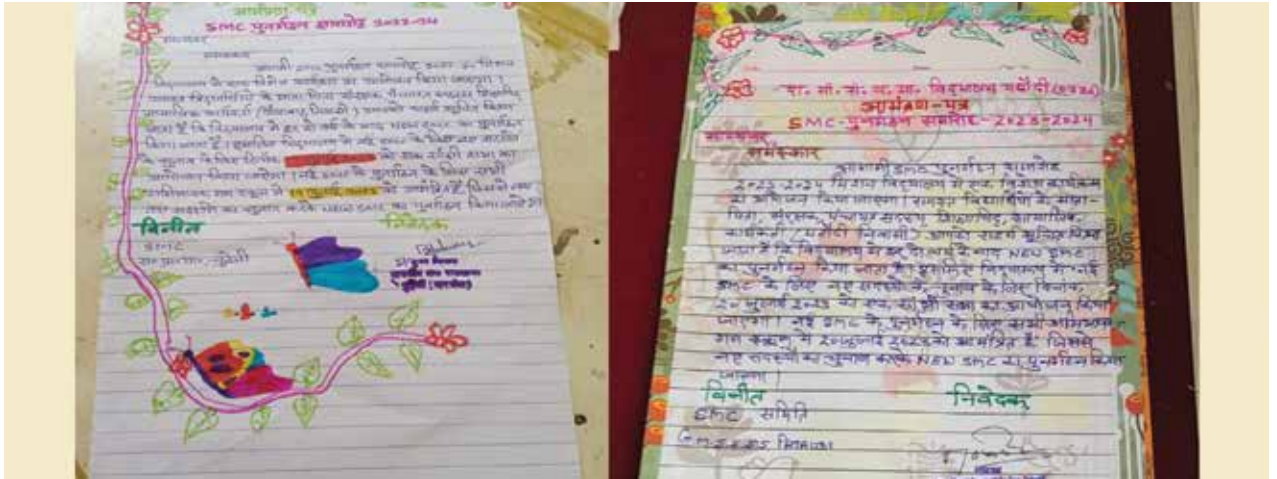
हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद (एचएसएसपीपी) समग्र शिक्षा हरियाणा ने सप्ताह भर चलने वाली अपनी अग्रणी पहल, साँझी सभा के साथ एक बेहतरीन उदाहरण स्थापित किया है। पूरे राज्य में एसएमसी का पुनर्गठन 17 से 22 जुलाई, 2023 के बीच हुआ। स्कूल प्रबंधन समितियों का गठन हरियाणा शिक्षा का अधिकार, 2011 और हरियाणा शिक्षा का अधिकार, 2022 में संशोधन के मानदंडों के अनुसार किया गया है।

कुछ नयी पहल-

एचएसएसपीपी ने साँझी सभा में सामूहिक विचार-विमर्श, संवाद और भागीदारी के महत्व को देखते हुए-सभी संबंधित अधिकारियों की ट्रेनिंग के साथ-साथ कुछ प्रशंसनीय पहल की।

1. **साँझी सभा के लिए कोरम:** इस बार साँझी सभा पुनर्गठन के दिन स्कूल में नामांकित छात्रों के कम से कम 50% छात्रों के माता-पिता की उपस्थिति अनिवार्य की। इससे यह सुनिश्चित हुआ कि चुने गए सदस्य समुदाय की आवाज़ का प्रतिनिधित्व करते हैं और उन्हें पारदर्शी तरीके से चुना जाए।





2. बीआरपी और एबीआरसी पदेन एसएमसी सलाहकार: ऐसा होने पर उन्हें एसएमसी सदस्यों का मार्गदर्शन करने और अपनी राय रखने का मौका मिलेगा। साथ ही दूसरी एसएमसी की सर्वोत्तम प्रथाओं को भी साझा करने का अवसर मिलेगा।

3. एक सप्ताह की एसएमसी गठन की प्रक्रिया: पहले जो एक दिवसीय गठन कार्यक्रम हुआ करता था उसे अब एक सप्ताह के लिए रखा गया है ताकि बीआरपी/एबीआरसी को अधिक स्कूलों का दौरा करने का मौका मिले और ज्यादा से ज्यादा माता-पिता जुड़ पाएँ।

4. प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय के लिए एक अलग समिति- ऐसे प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय के लिए अलग समिति होगी, जिसका एक अलग यूटीआईएसई कोड है।

5. नियमित निगरानी: जिला, ब्लॉक और क्लस्टर स्तर के अधिकारियों को साँझी सभा की निगरानी करने का आदेश दिया गया, जिससे अधिक जवाबदेही को बढ़ावा मिला। इसके साथ ही एसएमसी की बैठक और प्रशिक्षण को भी एसएमसी सदस्यों के अनुसार करने का निर्णय लिया गया, ताकि बैठक और प्रशिक्षण में ज्यादा से ज्यादा सदस्य आ सकें।

6. छात्रों की भागीदारी: साँझी सभा प्रक्रिया में छात्रों को शामिल कर उन्हें साँझी सभा के लिए निमंत्रण दिया जा रहा है।

7. सदस्यों को बदलने के लिए प्रावधान: यदि कोई सदस्य निष्क्रिय है, तो अब एसएमसी के कार्यकाल में किसी भी समय ऐसे सदस्यों को बदलने के लिए एक आधिकारिक तरीका सुनिश्चित किया गया है।

जिला स्तर के अधिकारियों का प्रशिक्षण सत्र-

यह सुनिश्चित करने के लिए कि सबकी भूमिका में स्पष्टता हो और हितधारक क्षमता में सुधार हो, साँझी सभा की तैयारी में डीपीसी, बीआरपी और एबीआरसी का प्रशिक्षण शामिल था। इस प्रशिक्षण में साँझी सभा की प्रक्रिया की रूपरेखा पेश की गई और आयोजन के लिए कुछ संसाधन साझा किए गए।



विद्यालय प्रबंधन समिति की मुख्य जिम्मेदारी हैं- स्कूल विकास योजना तैयार करना, स्कूल फंड के उपयोग की निगरानी करना और स्कूल में शैक्षणिक गतिविधियों की निगरानी करना। माता-पिता इसलिए एसएमसी में शामिल होते हैं ताकि वे छात्रों के विकास की निगरानी कर सकें। मुझे आशा है कि साँझी सभा से स्कूलों के कामकाज और विद्यार्थियों का समग्र विकास को ताकत मिलेगी।

**-डॉ. अंशज सिंह
राज्य परियोजना निदेशक, हरियाणा**

सरकारी स्कूलों में अभिभावकों की भागीदारी को मजबूत करने के लिए काम करने वाली 'सामर्थ' नामक संस्था ने साँझी सभा की रूपरेखा और कार्यान्वयन में सहयोग किया है। उन्होंने एक सप्ताह की अवधि में लगभग 1500 अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण आयोजित करने में मदद की। इन 1500 अधिकारियों ने अपने-अपने समूहों में 14,000 से अधिक अधिकारियों को प्रशिक्षित किया, जिससे शासन के सभी स्तरों पर परिवर्तन, प्रगति और भागीदारी का प्रभाव दिखा। प्रशिक्षण सत्रों ने अधिकारियों को समस्याओं के समाधानों पर विचार-मंथन करने, संदेह दूर करने और साँझी सभा की कई प्रक्रियाओं पर स्पष्टता बनाने में मदद की।

एसएमसी पोर्टल-

एसएमसी पोर्टल का उद्देश्य केवल एक प्रभावी एसएमसी गठन की प्रक्रिया तक ही सीमित नहीं है- यह एसएमसी के प्रभावी कामकाज के बारे में भी बात करता है। इस पोर्टल पर स्कूल स्तर पर होने वाले एसएमसी के प्रशिक्षण और बैठकों की जानकारी भी एकत्रित की जाएगी।

स्कूलों को एसएमसी के सदस्यों का विवरण, एसएमसी बैठकों की तिथि, एजेंडा, मीटिंग के कार्यवृत्त और स्कूल स्तर के प्रशिक्षण में शामिल विषयों का विवरण अपलोड करना होगा। यह पोर्टल जिला और ब्लॉक स्तर के अधिकारियों को उनके अधिकार क्षेत्र में एसएमसी का काम और जरूरतें दर्शायेगा। यह पोर्टल एक उपयोगी

निगरानी उपकरण के रूप में भी काम करेगा। एसएमसी पोर्टल को लॉन्च करने के बाद, पूरे भारत में हरियाणा सबसे पहला राज्य बन गया है जिसने ऐसे पोर्टल को लॉन्च किया है। इस पोर्टल के द्वारा एचएसएसपीपी प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित कर रहा है और हर स्तर पर अधिकारियों की अपने काम करने की क्षमता का निर्माण कर रहा है।

स्कूल और समुदायों को करीब लाना एक कठिन काम हो सकता है, जिसके लिए दृढ़-निश्चय और पहल की आवश्यकता होती है। एचएसएसपीपी ने साँझी सभा की रूपरेखा और कार्यान्वयन के माध्यम से स्कूलों और समुदायों को करीब लाने की काम में काफी सफलता हासिल की है।

अगर किसी गाँव के एसएमसी सदस्य यह कहना चाहते हैं कि उनके गाँव में शिक्षण-कार्य के स्तर में सुधार की आवश्यकता है या वे स्कूल संबंधी अन्य समस्याओं पर चर्चा करना चाहते हैं, तो पोर्टल उन्हें ऐसी बातें रखने का अवसर देता है। स्कूलों, एसएमसी सदस्यों और विभाग के अधिकारियों के बीच एक संबंध स्थापित करता है। इस पोर्टल को लॉन्च करने का उद्देश्य स्कूलों के बारे में जानकारी एकत्र करना और उन तक आसानी से पहुँच बनाना है और स्कूलों को उनके सामने आने वाली किसी भी समस्या को आसानी से सामने लाना है। निश्चित तौर पर यह पोर्टल काफी लाभकारी सिद्ध होने वाला है।

**प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर (विज्ञान)
हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद, पंचकूला**





ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर

संकेत, लक्षण, चुनौतियाँ और अवसर



ऑटिज़्म एक विकासात्मक विकार है, जिसमें व्यक्ति को सामाजिक, संचार और व्यवहार के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर के कई प्रकार हैं- जैसे ऑटिस्टिक डिसऑर्डर, अस्पॉर्गर सिंड्रोम, पर्वसीव विकासात्मक डिसऑर्डर, और अन्या। यह एक विकास संबंधी गड़बड़ी है जिससे पीड़ित व्यक्ति को बातचीत करने में, पढ़ने-लिखने में और समाज में मेलजोल बनाने में परेशानियाँ आती हैं। ऑटिज़्म एक ऐसी स्थिति है जिससे पीड़ित व्यक्ति का दिमाग अन्य लोगों के दिमाग की तुलना में अलग तरीके से काम करता है। यानी ऑटिज़्म से पीड़ित लोग भी एक-दूसरे से अलग होते हैं। यानी ऑटिज़्म के अलग-अलग मरीजों को अलग-अलग लक्षण महसूस हो सकते हैं। हालाँकि इस बीमारी के बारे में अभी तक बहुत ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है। वैसे तो इस बीमारी से पीड़ित लोग नौकरी करने, परिवार और दोस्तों के साथ मेल-मिलाप करने में सक्षम होते हैं, लेकिन कई बार उन्हें इसके लिए दूसरों की मदद लेनी पड़ती है। जहाँ कुछ ऑटिस्टिक लोगों को पढ़ने-लिखने में परेशानी होती है तो वहीं ऑटिज़्म के कुछ मरीज या तो पढ़ने लिखने में बहुत तेज होते हैं या सामान्य होते हैं। परिवार, अध्यापकों या दोस्तों के सहयोग से ये लोग नई स्किल्स सीखने में भी सक्षम होते हैं और बिना किसी की मदद के काम कर पाते हैं। कुछ अध्ययनों में ऐसा देखा गया है कि निदान और

हस्तक्षेप उपचार सेवाओं की जल्द मदद से ऑटिस्टिक लोगों को सामाजिक व्यवहार और नयी स्किल्स सीखने में मदद मिलती है, जिससे वे अपना जीवन बेहतर तरीके से जी पाते हैं।

तथ्य-

ऑटिज़्म तीसरी सबसे आमफहम शारीरिक और मानसिक दिव्यांगता है। ऐवशन फ़ॉर ऑटिज़्म के एक अध्ययन के मुताबिक, इसके घटित होने की दर करीब 17 लाख है (अनुमानित दर के मुताबिक 250 बच्चों में से एक बच्चा ऑटिज़्म से पीड़ित होता है)। ऑटिज़्म का कोई इलाज नहीं है। भारत में ऑटिज़्म के प्रकारों की संख्या का पता लगाना मुश्किल है, क्योंकि इसकी पहचान और पंजीकरण में कमी है। हाल ही में एक सर्वेक्षण में पाया गया है कि 11.25 प्रतिशत से 13.47 प्रतिशत भारतीय बच्चों में ऑटिज़्म के कुछ लक्षण मौजूद हैं।

ऑटिज़्म के कुछ सामान्य लक्षण हैं-

ऑटिज़्म के लक्षण व्यक्ति से व्यक्ति में अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन कुछ सामान्य श्रेणियाँ हैं, जिनमें उन्हें बाँटा जा सकता है।

सामाजिक संपर्क में कमी- ऑटिज़्म के मरीजों को दूसरों के साथ संपर्क स्थापित करने, समझने और बनाए रखने में परेशानी होती है। वे आँखों में आँखें डालकर बात करना, हाथ मिलाना, मुस्कुराना या शरीर की भाषा पढ़ना पसंद नहीं करते हैं।

संप्रेषण में कमी- ऑटिज़्म के मरीजों को भाषा, संचार, और समझ के कौशलों में कमी होती है। उन्हें अपनी भावनाओं, सोच या इच्छाओं को प्रकट करने में परेशानी होती है।

समानता, पुनरावृत्ति, और प्रतिबंधकता- ऑटिज़्म के मरीजों को प्रतिबंधकता (rigidity) होती है, मतलब वे परिवर्तन, समय-सारिणी या प्रक्रिया (procedure) में परिवर्तन सहन नहीं कर पाते हैं।

संवेदना में परिवर्तन- ऑटिज़्म के मरीजों को सुनने, देखने, स्पर्श, सूघने या स्वाद की संवेदना में परिवर्तन होता है।

समस्या-सुलझाने में कमी- ऑटिज़्म के मरीजों को समस्या-सुलझाने, प्रतिक्रिया और समाधान के कौशलों में कमी होती है।

संकल्पना में कमी- ऑटिज़्म के मरीजों को संकल्पना, रचनात्मकता और इनोवेशन के कौशलों में कमी होती है।

ऑटिज़्म के मरीजों में पहले तीन साल में ही ऑटिज़्म के लक्षण दिखाई देते हैं, लेकिन कभी-कभी ये लक्षण बाद में भी प्रकट हो सकते हैं। ऑटिज़्म के लक्षणों का पता लगाने के लिए, विशेषज्ञों का सहयता लेना जरूरी है।

ऑटिज़्म की पहचान कैसे की जाती है?

ऑटिज़्म की पहचान का कोई एक मेडिकल टेस्ट उपलब्ध नहीं है, लेकिन कुछ विशिष्ट आकलन और जाँचे, इस विकार के होने की पुष्टि कर सकती हैं। ऐसी ही कुछ जाँचों में शामिल हैं-

शारीरिक और तंत्रिका तंत्र के परीक्षण, ऑटिज़्म डायग्नोस्टिक इंटरव्यू- रिवाइज्ड (एडीआई-आर), ऑटिज़्म डायग्नोस्टिक ऑब्जर्वेशन शेड्यूल (एडीओएस) चाइल्डहुड ऑटिज़्म रेटिंग स्केल (सीएआरएस), जिलियम ऑटिज़्म रेटिंग स्केल, परसेसिव डेवलेपमेंटल डिसऑर्डर स्क्रीनिंग टेस्ट, क्रोमोसोम असामान्यता को चेक करने के लिए जेनेटिक परीक्षण, संचार, भाषा, बोलचाल, संचालन, पढ़ाई-लिखाई में प्रदर्शन, संज्ञानात्मक कौशल से जुड़े टेस्ट।

ऑटिज़्म का निदान-

फिलहाल, ऑटिज़्म के डायग्नोसिस या निदान के लिए कोई विशिष्ट टेस्ट नहीं है। आमतौर पर अभिभावकों को बच्चे के व्यवहार और उसके विकास पर ध्यान देने के लिए कहा जाता है, ताकि डिसऑर्डर का पता लगाने में मदद हो। विशेषज्ञों द्वारा मरीज की देखने सुनने बोलने और मोटर कॉर्डिनेशन की क्षमता का आकलन किया जाता है। यदि बच्चे में निम्न प्रकार के लक्षण दिखाई देते हैं तो उसे ऑटिज़्म-पीड़ित माना जाता है-

एक ही बात या एक्टिविटी को बार-बार करना, अलग-अलग सामाजिक स्थितियों में लोगों के साथ बातचीत करने या सम्पर्क करने में समस्या आना।

आमतौर पर दो साल की उम्र के आसपास बच्चों में





ऑटिज्म होने का पता चल जाता है। लेकिन कुछ बच्चों में ये लक्षण जल्दी नहीं दिखते हैं। इसीलिए जब बच्चा स्कूल जाने लगता है या जब वह किशोर हो जाता है तब उसके ऑटिस्टिक होने का पता चलता है।

ऑटिस्टिक बच्चों में क्षमताएँ और योग्यताएँ-

दृश्यों की ओर अपने आसपास की अच्छी याददाश्त, चीजों को कायदे से, यानी व्यवस्थित और संगठित ढंग से करना, अमूर्त अवधारणाओं को समझने की योग्यता, अपनी रुचि के क्षेत्र में उत्कृष्टता, भाषाओं के प्रति दिलचस्पी (उन बच्चों में जो ठीक से बोल पाते हैं)

ऑटिज्म में जीवन शैली-

ऐसे बच्चे जो ऑटिज्म से पीड़ित हैं उनके लिए ये जीवन शैली से जुड़े बदलाव मददगार साबित हो सकते हैं-

1. बच्चे की रोजमर्रा की जिंदगी में मदद ऐसे करें-

बच्चों के साथ कम्युनिकेशन को आसान बनाएँ। बच्चों के साथ धीरे-धीरे और साफ आवाज़ में बात करें। ऐसे शब्दों का प्रयोग करें जो समझने में आसान हो।

बच्चे से बातचीत करते समय बार-बार बच्चे का नाम दोहराएँ, ताकि बच्चा यह समझ सके कि आप उसी से बात कर रहे हैं। बच्चे को आपकी बात समझने और फिर उसका जवाब देने के लिए पर्याप्त समय लेने दें। बातचीत के दौरान हाथों से इशारे करें और तस्वीरों की मदद भी ले सकते हैं। आप किसी स्पीच थेरेपिस्ट की सहायता भी ले सकते हैं।

2. खाना सिखाएँ -

ऑटिज्म वाले बच्चे अक्सर खाने-पीने से आनाकानी करते हैं और किसी विशेष रंग या प्रकार का ही भोजन करते हैं। वे बहुत अधिक या बहुत कम मात्रा में भी खा सकते हैं। वहीं उन्हें खाना खाते समय भोजन अटकने या खँसी की समस्याएँ भी हो सकती हैं। ऐसे मामलों में अभिभावकों को अपने बच्चे के खाने-पीने से जुड़ी आदतें एक डायरी में लिख कर रखनी चाहिए ताकि वे बच्चे की समस्याओं को समझ सकें और उससे बचने के उपाय अपना सकें। इसी तरह बच्चे को अगर खाने में दिक्कत हो तो अपने डॉक्टर से बात करें।

3. जब बच्चे को सोने में परेशानी हो तो-

पेरेंट्स किसी डायरी में बच्चे के सोने-जागने से जुड़ी आदतों के नोट्स बनाएँ और समस्या को समझें। बच्चे का कमरा शांत और अंधेरे से भरा हो। बच्चे के सोने और जागने का समय निश्चित करें। ज़रूरत हो तो बच्चे को ईयर-प्लग्स पहनने दें।

4. भावनाओं पर काबू रखना सिखाएँ-

कुछ बच्चों में भावनाओं को कंट्रोल करना मुश्किल हो जाता है और वे अक्सर रो पड़ते हैं। ऐसे बच्चों की मदद करने के लिए माता-पिता यह करें-

हर बार डायरी में उन बातों या घटनाओं के बारे में लिखें जिसके बाद बच्चे ने रोना शुरू किया हो। बच्चे के



कमरे से भड़कीली बतियाँ और बल्ब हटा दें। बच्चे को मधुर और सुकून-भरा संगीत सुनने दें। बच्चे की दिनचर्या में किसी प्रकार के बदलाव करने से पहले उसे इसकी जानकारी दें।

5. साफ-सफाई का महत्व सिखाएँ-

माता-पिता अपने बच्चों को साफ-सुथरा रहने का महत्व ज़रूर समझाएँ। बच्चे को उनकी साफ-सफाई रखना सिखाएँ और इसके लिए दिन में समय निश्चित करें।

6. सहज रहने में करें मदद-

कुछ बच्चे बहुत भावुक और संवेदनशील होते हैं। ऐसे बच्चे भीड़, शोर और तेज़ रोशनी से घबरा जाते हैं। ऐसे बच्चों के पेरेंट्स को ऐसी स्थितियों से बचने के लिए इन बातों का ध्यान रखना चाहिए-

अगर बच्चे को शोर से दिक्कत है तो उसे शोर कम करने वाले हेडफोन या इयरप्लग्स का इस्तेमाल करने दें। बच्चे से बातचीत करते समय उन्हें आपकी बात समझने के लिए समय दें। अगर बच्चा फिर भी समझ न पाए, तो माता-पिता दोबारा तेज़ आवाज़ में बोलें। अगर बच्चा नयी जगह में सहज नहीं है तो अभिभावक उसे उन जगहों पर तब ले जाएँ, जब वहाँ बहुत भीड़ न हो या शांति हो। फिर धीरे-धीरे वहाँ बच्चे के रहने का समय बढ़ाते जाएँ, जिससे वे सहज हो जाएँ। बच्चे की भावनाओं को सँभालने के लिए उनके लिए शांत माहौल का निर्माण करें।

भारत सरकार की कुछ पहलें-

दिव्यांगता से पीड़ित व्यक्तियों के अधिकारों का अधिनियम (2016), मानसिक स्वास्थ्य परिचर्या अधिनियम (2017), ऑटिज्म, सेरेब्रल पाल्सी, मानसिक मंदता और बह दिव्यांगता से पीड़ित व्यक्तियों के कल्याण के लिए राष्ट्रीय ट्रस्ट अधिनियम (1999) और ऑटिज्म, सेरेब्रल पाल्सी, मानसिक मंदता और बहुदिव्यांगता से पीड़ित व्यक्तियों के कल्याण के लिए राष्ट्रीय ट्रस्ट (संशोधन) विधेयक (2018) के माध्यम से कानूनी सुरक्षा और कल्याण का प्रावधान। ऑटिज्म, सेरेब्रल

पाल्सी, मानसिक मंदता और एकाधिक दिव्यांगता वाले व्यक्तियों के कल्याण के लिए राष्ट्रीय ट्रस्ट अधिनियम, 1999- इस अधिनियम के तहत, एएसडीके मरीजों को सुरक्षा, समुचितता, सह-सहस्रता तथा दिव्यांगताओं से पीड़ित व्यक्तियों को सक्षम और सशक्त बनाना है, ताकि वे संभव होने पर अपने परिवार और समुदाय के साथ स्वतंत्र और पूर्णता से जी सकें। दिव्यांगता व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम, 2016- इस अधिनियम में एएसडी को 21 प्रकारों में से एक दिव्यांगता (disability) के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। दिव्यांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति (एनपीपीडी), 2006- इस नीति में एएसडी के मरीजों को पुनर्वास, शिक्षा, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, कानूनी सहायता, अनुसंधान और जागरूकता के लिए विभिन्न सुविधाएँ प्रदान की गई हैं।

समावेशी शिक्षा-

ये अनिवार्य है कि स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों के लिए समान अवसर मुहैया कराएँ। कानूनी प्रावधानों और ऐसे बच्चों के लिए सरकारी कार्यक्रमों के बावजूद शिक्षण संस्थान ऐसे बच्चों को अपने यहाँ दाखिला नहीं देते और ऐसी अतिरिक्त सुविधाएँ मुहैया नहीं कराते हैं, जैसे- वैयक्तिक शैक्षिक योजना, सिखाने के वैकल्पिक तरीके आदि।

संदर्भ

ऑटिज्म सोसायटी ऑफ़ इंडिया- <http://autismso-cietofindia.org/>
 सेंटर फॉर डिज़ीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन- <http://www.cdc.gov/>
 वीफॉरऑटिज्म: <http://www.weyautism.org/>
 चित्र साभार: आउटलुक व नचरिंग पेयरेटिंग

डॉ. राजीव वत्स
 प्रधानाचार्य
 राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
 खेतपुराही, पंचकूला





स्काउटिंग हमें बेहतरीन इन्सान बनाती है: डॉ. मनीराम शर्मा

डॉ. ओमप्रकाश कादयान



हरियाणा राज्य भारत स्काउट्स एण्ड गाइड्स के तत्वावधान में राज्य स्तरीय कैम्प का आयोजन तारा देवी स्थित ट्रेनिंग सेंटर में किया गया,

जिसमें भिवानी, फरीदाबाद, पलवल, पानीपत, सोनीपत एवं जींद के प्रतिभागियों ने उत्साह व ऊर्जा के साथ भाग लिया। राज्य प्रशिक्षण आयुक्त (स्काउट्स) तथा कैम्प के इंजार्च लक्ष्मी वर्मा ने बताया कि इस कैम्प में 70 स्काउट मास्टर व कब मास्टर तथा 120 स्काउट्स, रोवर्स ने भाग लिया।

इस कैम्प के दौरान विभिन्न गतिविधियाँ करवाई गईं, जिनमें कैम्प क्राफ्ट के हाइकिंग व ट्रैकिंग, आपदा प्रबंधन, लीडरशिप स्टिकस एवं साहसिक गतिविधियाँ, स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत कैम्पस की साफ-सफाई कार्यक्रम शामिल किये गए। हरा-भरा व खुशहाल जीवन, पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधे लगाए गए तथा हमारे जीवन में पेड़-पौधों, जंगलों के महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। राज्य प्रशिक्षण आयुक्त लक्ष्मी वर्मा ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमारा हर सौंसे पेड़ों के कारण है। मनुष्य के साथ-साथ समस्त जीव-जगत जीवित व खुशहाल रहें, इसके लिए अधिक से अधिक पौधे

लगाकर उनका संरक्षण कर उन्हें बड़ा करना आवश्यक है।

श्री वर्मा ने कहा कि बेडेन पॉवेल का मानना था कि प्रकृति ने हमें संसार में प्रसन्न रहने के लिए भेजा है। और प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए जरूरी है हम सबको प्रसन्न रखें। उन्होंने कहा कि स्काउटिंग दूसरों की मदद करना, जीव-जन्तुओं व प्रकृति से प्रेम करना सिखाती है। हम अपने लिए तो जीएँ, किन्तु दूसरों का खयाल अवश्य रखें। अपने देश, अपने समाज, जरूरतमंद लोगों के लिए कुछ बेहतर करें। उन्होंने कहा स्काउट्स स्वार्थ नहीं, बल्कि त्याग समर्पण, प्रेम, सहयोग व भाईचारा सिखाता है। स्काउट एक विश्व व्यापी ऐसी संस्था है जो पूरे विश्व को एकता के सूत्र में बाँधने का काम करती है।

कैम्प के दौरान अवलोकन व स्काउट्स का मार्गदर्शन करने के लिए राज्य के आयुक्त एवं अवैतनिक राज्य सचिव डॉ. मनीराम शर्मा ट्रेनिंग सेंटर पहुँचे। उन्होंने कैम्प की गतिविधियों को बारीकी से देखा। अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा कि आप भाग्यशाली हैं, क्योंकि आपको इस प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण ट्रेनिंग सेंटर में प्रशिक्षण लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। आप यहाँ प्रकृति के सान्न्ध्य में आए हैं। आप यहाँ की शुद्ध व शीतल हवा को महसूस करिये, दूर तक फैले विशाल पहाड़ों का सौन्दर्य निहारिये, पक्षियों का कलरव, झिंगुरों की मधुर आवाज़ का आनन्द तथा सूर्योदय व सूर्यास्त के समय स्वर्णिम नजारों को अपने अन्तरंग में उतारिये। यहाँ

आकर प्रकृति से बहुत कुछ सीखा जा सकता है जो जीवन को और बेहतर बना सकता है।

राज्य सचिव डॉ. मनीराम शर्मा ने कहा कि स्काउट छोटे-बड़े का आदर करना, जरूरतमंदों की मदद करना, देश के लिए जीने की इच्छा-शक्ति जगाना सिखाता है। स्काउट हमें अनुशासित व कर्तव्यपरायण बनाता है। जो समाज में बेहतरीन बदलाव लाने में सहायक है। उन्होंने कहा कि मैं उम्मीद करता हूँ कि आप यहाँ से और बेहतर इन्सान बनकर जाएँगे तथा देश व समाज के उत्थान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। उन्होंने कहा कि स्काउटिंग- मिशन को जन-जन तक पहुँचाने में सहयोग करेंगे। डॉ. मनीराम शर्मा ने विधिपूर्वक कैम्प फायर का शुभारंभ किया तथा प्रतिभागियों के साथ फोकडॉस और अन्य गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उन्होंने बेहतरीन कार्यक्रम के लिए सभी को बधाई दी।

राज्य प्रशिक्षण आयुक्त (स्काउट) लक्ष्मी वर्मा ने कैम्प के समापन पर स्काउट मास्टर, कबमास्टर, स्काउट्स व रोवर्स को प्रमाण-पत्र बाँटे तथा महत्त्वपूर्ण गुर दिए। कैम्प के दौरान स्काउट मास्टरों व स्काउट्स ने श्री वर्मा का जन्म-दिवस मनाकर उन्हें शुभकामनाएँ दीं। उसके बाद सभी प्रतिभागी शिमला-कालका रेलयात्रा का आनन्द लेने मधुर स्मृतियों के साथ अपने घर की ओर चले।

राकवमावि एमपी रोही
जिला- फतेहबाद, हरियाणा





पेंसिल स्केच में जान डाल देता है सुमित



सत्यवीर नाहड़िया



हर बच्चे में कोई प्रतिभा छिपी होती है। यदि इस प्रतिभा को पहचान कर उचित मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन दिया जाए तो इसे निखरते देर नहीं लगती। रेवाड़ी जिले की राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सीहा की विज्ञान संकाय की 11वीं कक्षा का छात्र सुमित ऐसा ही प्रतिभाशाली छात्र है, जिसने एकलव्य की भौति अनूठी साधना के बूते पर पेंसिल स्केच में महारत हासिल कर ली है। दिलचस्प पहलू यह है कि इस छात्र ने यह सब डिजिटल क्रांति का सदुपयोग करते हुए यूट्यूब से सीखा है।

रेवाड़ी जिले के गाँव बुड़ौली में 7 मार्च, 2008 को पिता राजकरण तथा माता ज्योति के घर पैदा हुए सुमित के परिवार में इस विधा से कोई नहीं जुड़ा हुआ है। प्राथमिक या माध्यमिक स्तर की पढ़ाई के दौरान में उसने कभी चित्रकला या पेंसिल स्केच आदि में प्रतिभागिता तक नहीं की। कोरोना काल में सुमित को यूट्यूब के माध्यम से पहली बार पेंसिल स्केच विधा पसंद आई। फिर क्या था, वह निरंतर पेंसिल स्केच न केवल यूट्यूब पर देखने लगा, अपितु बनाने भी लगा। अपने गाँव बुड़ौली के सरकारी स्कूल में अपनी इस कला के प्रदर्शन पर उसे प्रोत्साहन भी मिला, जिसके चलते उसकी रुचि-अभिरुचि निरंतर बढ़ती गई।

सीहा स्कूल की विज्ञान संकाय में दाखिला लेने के बाद भौतिकी प्राध्यापक हरीश कुमार ने सुमित की प्रतिभा को लीक से हटकर पाया तथा उसके लिए डाइंग शीट्स, पेंसिल क्लर आदि देकर प्रोत्साहित किया। सुमित की इस प्रतिभा को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ग्रीष्म अवकाश हेतु शहीदों एवं स्वतंत्रता सेनानियों की पोर्ट्रेट्स बनाकर लाने का रोचक होमवर्क दिया गया। छुट्टियों के बाद सुमित अपने अनमोल खजाने के साथ नए आत्मविश्वास से लबरेज था।

ग्रीष्मावकाश के बाद विद्यालय में आयोजित प्रतिभा प्रोत्साहन सम्मान समारोह में विज्ञान कला प्रदर्शनी में सुमित की स्टॉल छापी रही, जिस पर लगाई गई पेंसिल स्केच की अनूठी कलाकृतियों से इस समारोह के मुख्य अतिथि अतिरिक्त उपायुक्त स्वप्निल



रवींद्र पाटिल भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके, क्योंकि वे खुद पेंटिंग करते हैं। उन्होंने न केवल सुमित की प्रतिभा को मुक्त कंठ से सराहा, अपितु उसकी पेंटिंग्स पर ऑटोग्राफ भी दिए।

विद्यालय में एक अन्य कार्यक्रम में पधारी पेंसिल स्केच की कलाकार हर्षिता ने भी सुमित को कुछ टिप्स दिए तथा उसके लिए विशेष सामग्री सुझायी, जो विद्यालय ने छात्र को उपलब्ध करवायी। सुमित बताता है कि उसने यूट्यूब से उत्तराखंड के जाने-माने पेंसिल स्केच बनाने वाले कलाकार सौरभ जोशी की पेंटिंग्स तथा पेंसिल स्केच को देखकर इस विधा की बारीकियाँ सीखी हैं, जिन्हें अब वह अपनी निरंतर साधना से निखरने में जुटा हुआ है। विद्यालय ने उक्त प्रतिभा प्रोत्साहन एवं सम्मान समारोह में छात्र सुमित को विद्यालय के सर्वश्रेष्ठ कलाकार के रूप में अलंकृत किया है।

प्राचार्य

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सीहा, जिला- रेवाड़ी, हरियाणा





बाल सारथी

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूंगी।

-आपकी यामिका दीदी

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

- प्रश्न 1- वर्तमान में धरती पर कितने महाद्वीप हैं?
उत्तर- सात महाद्वीप।
- प्रश्न 2- सूर्य के चारों ओर कितने ग्रह हैं?
उत्तर- आठ ग्रह।
- प्रश्न 3- मानव शरीर में कितनी हड्डियाँ होती हैं?
उत्तर- 206 हड्डियाँ।
- प्रश्न 4- किस तापमान पर जल का घनत्व अधिकतम होता है?
उत्तर- 4 डिग्री सेल्सियस।
- प्रश्न 5- तापमान को मापने के लिए कौन-सा उपकरण प्रयोग किया जाता है?
उत्तर- थर्मामीटर।
- प्रश्न 6- वायुमंडल के लिए पेड़ों की मुख्य भूमिका क्या है?
उत्तर- कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करना।
- प्रश्न 7- अधिकांश जीवों का जीवन किस गैस द्वारा संभव है?
उत्तर- ऑक्सीजन।
- प्रश्न 8- क्या वृक्षों के लिए भी ऑक्सीजन जरूरी है?
उत्तर- हाँ, श्वसन प्रक्रिया के लिए।
- प्रश्न 9- हमारे शरीर में ब्लड पंप करने की मुख्य वजह क्या है?
उत्तर- रक्त को शरीर के अंगों तक पहुँचाना।
- प्रश्न 10- प्रकाश का विभिन्न रंगों में विभाजन कौन-सा प्रकाशिक उपकरण प्रदान करता है?
उत्तर- प्रिज़्म।



पहेलियाँ

- 1- प्रथम हटे तो बँधूँ समान,
नीला-नीला रंग।
अंत हटे तो बनूँ आसमों,
हूँ प्रकृति के संग।
- 2- मैं ईंधन हूँ अजब निराला,
काला-काला रंग।
धरती में के रहूँ गर्भ में,
ज्वलनशील है अंग।
- 3- बिजली से मैं चलता जाऊँ,
तीन पंख या मेरे चार।
गर्मी से राहत पहुँचाऊँ,
मेरी महिमा अपरंपार।
- 4- घर की मैं रखवाली करता,
घर-घर पाया जाता हूँ।
ताला मुझको समझ न लेना,
वफादार कहलाता हूँ।
- 5- बच्चे बूढ़े और जवान,
मैं रखता हूँ सबका ध्यान।
पाँच अक्षर का मेरा नाम,
बोलो प्यारे राजा राम।
- 6- तीन अक्षर का मेरा नाम,
मुझे उड़ाते रानी राम।
बादल से भी मिलकर आऊँ,
बोलो बच्चो क्या कहलाऊँ?
- 7- साथ-साथ मैं चलती जाऊँ,
किन्तु कभी मैं मिल ना पाऊँ।
सबको मंज़िल तक पहुँचाऊँ,
बोलो बच्चो क्या कहलाऊँ?

उत्तर - 1-आसमान, 2-पत्थर कोयला, 3- पंखा,
4-कुत्ता 5. टेलीविज़न, 6. पतंग, 7.
रेलपटरियाँ

डॉ. कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव (प्राअ)
रावगंज, कालपी, जिला- जालौन
पिन- 285204(उप्र)

पार्थवी

कक्षा 10+1

मुकंद लाल पब्लिक स्कूल, यमुनानगर।





ज्यामिति बाल पहेलियाँ

- विषय कौन-सा आकृति वाला समतल, दो या तीन आयामी कोण, वृत्त, घन, वर्ग बोध की गणित की शाखा है अति नामी
- वर्षा की बूँदें, ग्रह, तारे चेरी, चीकू, प्याज, अनार गोभी, टमाटर, काशीफल का बोलो है कैसा आकार
- साँप, पैर, धड़, घीया, तरोई तने वृक्ष के, सभी उँगलियाँ बतलाओ आकार है कैसा बैंगन, ककड़ी, मटर की फलियाँ
- अंडा, मछली, आम, पपीता अनन्नास, अंगूर या दाल इन आकृतियों को क्या कहते उत्तर दे दो, सरल सवाल
- फ्रिज, कमरे, खिड़की, दरवाजे बॉक्स, मेज, बिस्तर, अलमारी कंप्यूटर, टीवी, मोबाइल कैसी हैं आकृतियाँ प्यारी
- दिस्रता लंबे वृत्त का जैसा जिसके न कोई शीर्ष या रेखा समतल, बंद आकृति होती ज्यों मुर्गी का अंडा देखा
- दियासलाई, ईंट, डायरी डिब्बे जैसा है आकार छह फलक हैं, बारह किनारे जिसकी भुजाएँ आयताकार

उत्तर - 1. ज्यामिति 2. गोल 3. बेलनाकार
4. शंकवाकार 5. चौकोर 6. अंडाकार 7. घनाकार

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र
117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ-226022



बोलने वाली गुफा

किसी वन में मकोत्कट नाम का एक शेर रहता था। एक दिन भूख के मारे वह जंगल में इधर-उधर बहुत घूमा, लेकिन उसे कोई शिकार नहीं मिला। उसकी भूख बढ़ती जा रही थी। सूर्यास्त के समय उसे जंगल में एक गुफा दिखाई दी। उसने सोचा, 'इस गुफा में रात को जरूर कोई जानवर आता होगा। मैं इस गुफा में छुपकर बैठ जाता हूँ।' इसी बीच उस गुफा का स्वामी गीदड़ वहाँ आ जाता है। वह देखता है कि आज तो गुफा में किसी शेर के पैरों के निशान अंदर की तरफ तो गए हुए हैं, लेकिन बाहर की तरफ नहीं आए हैं।' उसने सोचा कि जरूर इस गुफा के अंदर कोई शेर है। वह गुफा से बहुत दूर खड़ा हो गया और गुफा को पुकारने लगा, 'हे गुफा! तुमने मुझसे वादा किया था कि जब भी तुम बाहर से आओगे तो मैं तुम्हें पुकारूँगी। अब यदि तुम मुझे नहीं पुकारोगी, तो मैं दूसरी गुफा में चला जाऊँगा।' यह सुनकर शेर ने सोचा कि जरूर यह गुफा प्रतिदिन अपने स्वामी को बुलाती होगी। आज मेरे भय के कारण उसे नहीं बुला रही है। मैं गीदड़ को बुलाता हूँ। वह आ जाएगा तो मैं उसे खाकर अपनी भूख मिटा लूँगा। यह सोचकर शेर ने एकाएक गीदड़ को ऊँची आवाज में पुकारना शुरू कर दिया। गीदड़ तेज रफ्तार में भागता हुआ कहने लगा, 'इस गुफा में रहते हुए मुझे बुढ़ापा आ गया है, आज तक मैंने इसे बोलते हुए नहीं सुना।'

शिक्षा- जहाँ ताकत काम नहीं करती, वहाँ बुद्धि बल का प्रयोग करना चाहिए।

नीलम देवी प्रवक्ता संस्कृत
स्व.से.चौ. जगराम.रावमावि गिगनाऊ
खंड लोहारु, जिला-भिवानी, हरियाणा

गौरैया

मेरे घर के इक उपवन में,
गौरैया आई तीन।
देख उन्हें रवि राधा राम,
आये रमा प्रवीन।

लगता है जल की ये प्यासी,
हैं लगती बहुत उदास।
दूर-दूर तक मिला न पानी,
और न मिलने की आस।

आओ हम सब मिलकर के अब,
पानी इन्हें पिलाएँ।

और साथ में दाना देकर,
इनको खुश कर जाएँ।

हरदम रक्षा करेंगे इनकी,
और करेंगे प्यार।
चोट अगर कोई पहुँचाएँ,
वह हमें नहीं स्वीकार।

डॉ. कमलेन्द्र कुमार
रावगंज, कालपी
जिला जालौन, उत्तर प्रदेश





खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा



आदरणीय अध्यापक साथियो व उत्साही विद्यार्थियो! खेल-खेल में विज्ञान शृंखला के अंतर्गत कुछ नई व रुचिकर कक्षाकक्ष व कक्षा से बाहर की विज्ञान गतिविधियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं-

1. स्थानीय खाद्य संस्करण इकाई का भ्रमण-

कक्षा 6, 7 व 8 के विद्यार्थियों को स्थानीय खाद्य संस्करण इकाई का भ्रमण करवाया गया। वहाँ उन्हें एक साधारण आइडिया के करोड़ों की टर्नओवर तक पहुँचने की गाथा सुनाई गयी। बच्चों को जब यह पता चला कि इस इकाई के संस्थापक व राष्ट्रपति अवाड़ी श्री धर्मबीर कंबोज उन्हीं के विद्यालय (रावमावि दामला) से ही कक्षा 10 तक पढ़े हुए हैं



तो उन्हें बहुत गर्व हुआ। श्री धर्मबीर कामबोज ने बताया कि वे विद्यार्थी जीवन में विज्ञान प्रदर्शनियों में फ्रिजरील विज्ञान मॉडल बना बनाकर ही यहाँ तक पहुँचे हैं। विद्यार्थियों को इस इकाई का भ्रमण कराने का उद्देश्य इंस्पायर मानक अवार्ड हेतु आइडिया देने के लिए प्रेरित करना था। विद्यार्थियों ने इस इकाई में बनने वाली खाद्य संस्करण मशीनों को बनते देखा व उनसे तैयार बहुत से खाद्य प्रसंस्करित उत्पाद जैसे जामुन, स्ट्राबेरी, मैंगो, आड़ू व आँवला की कैंडी को चखा। एलोवेरा, तुलसी, पुदीना के पेय व एलोवेरा साबुन, एलोवेरा फेस जैल को भी बनते देखा। विद्यार्थियों ने अपनी फ्रीडबैक में इस शैक्षणिक भ्रमण को इंस्पायर मानक आइडिया अवार्ड के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण गतिविधि बताया। इस शैक्षणिक भ्रमण से उनमें खाद्य प्रसंस्करण, खाद्य सुरक्षा, व्यावसायिक दक्षता, मानव स्वास्थ्य, सार्थक उद्यमिता की समझ उत्पन्न हुई। इस अनुभव के माध्यम से विद्यार्थियों ने न केवल वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त किया बल्कि वे उद्यमिता और व्यापारिक कौशल की ओर बढ़ने के लिए भी प्रेरित हुए।

2. स्वास्थ्य पर अतिथि व्याख्यान-

विद्यार्थियों के समक्ष समय-समय पर अतिथि व्याख्यान व विशेषज्ञ राय कितनी महत्त्वपूर्ण होती है, इसी की पूर्ति करती यह गतिविधि किशोर स्वास्थ्य थीम पर करवाई गई। इस जागरूकता कार्यक्रम में ड्राइंग कंपीटिशन का भी आयोजन किया गया जिसमें 54 विद्यार्थियों ने रंगों व विचारों के मिलाप का शानदार प्रदर्शन किया। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नाहरपुर से राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम के काउंसलर श्री संजीव कुमार व हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर दामला के सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. धीरज चावला ने विद्यार्थियों को किशोरावस्था में शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और बौद्धिक बदलावों को शामिल करते हुए विद्यार्थियों से बातचीत की। व्याख्यान में इन किशोर विद्यार्थियों को



किशोरावस्था में होने वाले विभिन्न मानसिक व शारीरिक परिवर्तनों से तालमेल बैठाने संबंधित टिप्स दिए। साथ ही साथ विद्यार्थियों को खून की कमी, पेट के कीड़ों से होने वाली शारीरिक व्याधियों के लक्षण बताये व विभिन्न गोलियाँ जैसे आयरन एवं फोलिक एसिड की टेबलेट, एल्बेंडाजोल की टेबलेट, ऊँचाई व वजन, दंत व दृष्टि रोग संबंधित जानकारी दी। प्रतिभागियों ने मौके पर ड्राइंग बना कर खेल-खेल में ही विभिन्न पुरस्कार भी जीते।

3. सौर ऊर्जा से विद्युत उत्पादन कैसे होता है?

कक्षा-6 के विद्यार्थियों की जिज्ञासा ये थी कि कक्षा-9 के कमरे की छत पर जो सोलर प्लेट्स लगी हैं, उनसे बिजली कैसे बनती है? विद्यार्थियों को 20-20 के समूह में सोलर पैनल्स के पास ले जाया गया और उन्हें विभिन्न कम्पनेंट जैसे अर्ध चालक पदार्थ, सौर सेल, सौर पैनल्स, उनकी सूर्य की तरफ पोजिशन, उनसे उत्पन्न होने वाली विद्युत का टर्मिनल तारों द्वारा बैटरियों में संग्रहीत होना व विद्युत वितरण बारे बताया गया। इसके बाद देख कर सीखना व तथ्यों के बारे में सुनकर विद्यार्थियों ने प्राप्त जानकारी को





तत्काल एक नोट के रूप में लिखकर जमा कराया। अवलोकन के बाद उन्होंने सोलर पैनल्स व परिपथ के चित्र भी बनाए। विद्यालय में उपलब्ध साधन को अवसर की तरह प्रयोग करके खेल-खेल में सौर ऊर्जा विषय बारे कक्षा कक्ष से बाहर जाकर जानकारी हासिल की।

4. लकड़ी-क्षय कवक बारे उत्सुकता

विद्यालय प्रांगण में खड़ा एक सूखा शीशम का पेड़ सदा विद्यार्थियों की उत्सुकता की वजह बनता है। कभी उस पर चींटियों का बसेरा हो या फिर उसकी खोखरों में गिलहरियों का बसेरा। कभी उस पर गिरगिट का रंग बदल कर बैठना या फिर छाल के



नीचे से कीमकों का झाँकना। इस सूखे पेड़ पर घटित होने वाली इन सब हलचलों पर बच्चे महीन नज़र रखते हैं। अबकी बार विद्यार्थियों ने पेड़ के जमीन से जुड़ाव बिंदु के पास कुछ अजीब-सी आकृतियों के रूप में प्रकट हुई संरचनाओं बारे में उत्सुकता दिखाई। इस बारे जीवविज्ञान प्रवक्ता श्री कश्मीरी लाल की एक्सपर्ट राय मौके पर ली गयी तो पता लगा कि ये संरचनाएँ लकड़ी-क्षय कवक (गुड डिफेंस फंजाई) हैं। इस फफूँदी के बीजाणु हवा में मौजूद रहते हैं और परिस्थितियों के उपलब्ध होते ही पनप जाते हैं। इस प्रकार की फफूँदी को ब्रेकेट फंजाई कहते हैं। यह मृतजीवी होने के कारण मृत पेड़/लकड़ी के लट्ठे पर पनपती है व उसका क्षय करती है। बच्चों ने पूछा कि यह हरे पेड़ पर नहीं गो करेगा क्या? तो इसके उत्तर में बताया गया कि हरे पेड़ की अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली होती है जो इस फफूँदी को जीवित भाग पर पनपने नहीं देगी, लेकिन यदि किसी हरे पेड़ का कोई भाग/शाखा मृत हो चुकी है तो वहाँ पर यह जरूर पनप सकती है।

5. शिरा विन्यास से जड़ व बीज के प्रकार का सम्बन्ध-

बच्चे जानते हैं कि जिन पौधों की पत्तियों का शिरा-विन्यास जालिका रूपी होता है, उनकी जड़ मूसला जड़ होती है, जबकि जिन पत्तियों का शिरा-विन्यास समान्तर होता है, उन पौधों की जड़ें रेखेदार प्रकार की होती हैं। परन्तु क्या शिराविन्यास की सहायता से उन पौधों के बीजों के प्रकारों का भी पता लगाया जा सकता है? जी हाँ, इसलिए सभी द्विबीज पत्री बीजों वाले पौधों में मूसला जड़ प्रणाली और जालीदार शिरा-विन्यास वाली पत्तियाँ होती



हैं, कुछ अपवादों को छोड़कर। समानान्तर शिराविन्यास एक बीज पत्री पौधों का विशिष्ट लक्षण है। जिनके उदाहरणों में बजारा, केला, जौ, घास, गेहूँ, मक्का, चावल, ज्वार, गन्ना आदि शामिल हैं।

अच्छा, तो आदरणीय अध्यापक साथियों व प्रिय विद्यार्थियों, आगामी अंक में फिर से मिलते हैं नई विज्ञान गतिविधियों के साथ।

साइंस मास्टर/ ईएसएचएम
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दामला
खंड जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा





हिंदी है जन-जन की भाषा

हिंदी

भाषा भावों, विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा के द्वारा मानव अपने विचारों एवं मनोभावों को व्यक्त करता है। भाषा ध्वनि प्रतीकों की एक व्यवस्था है जिसके माध्यम से मानव समूह विचार-विनिमय करता है। भाषा सर्वव्यापी है। यह हमारे विचार, स्वप्न, वार्तालाप, उपासना, प्रार्थना और संचार सभी में उपस्थित है। यह ज्ञान का भंडार, आनंद का अक्षय स्रोत तथा संचार का एक सशक्त माध्यम है। भाषा मानव की उपलब्धियों को स्थायी रूप प्रदान करती है। भाषा में किसी भी राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने की अपूर्व शक्ति है।

भारत एक विशाल देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। बहुभाषी होने के कारण हमारी एकता-अखंडता पर सदा खतरा मंडराता रहा है। भाषा को लेकर हुए आंदोलनों के कारण राष्ट्रीय एकता को कई बार आघात

पहुँचा है। भारतीय संविधान निर्माताओं ने भाषायी एकता की तीव्र आवश्यकता महसूस की। अतः उन्होंने भारत के लिए एक राष्ट्रभाषा निर्धारित करने का संकल्प लिया। कौन-सी भाषा राष्ट्रभाषा के गरिमामय पद पर सुशोभित हो, यह लंबे समय तक विवाद का विषय रहा। भिन्न-भिन्न क्षेत्र के लोगों ने अपनी-अपनी भाषाओं की वकालत की। अंततः हिंदी को 14 सितंबर, 1949 को संवैधानिक रूप से राजभाषा घोषित किया गया। संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी घोषित की गई है। अनुच्छेद 343 (2) के अनुसार इसे भारतीय संविधान लागू होने की तारीख अर्थात् 26 जनवरी, 1950 से लागू नहीं किया जा सकता था। इसे लागू करने के लिए संविधान लागू होने के 15 वर्ष बाद की अवधि रखी तो गई, परंतु फिर अनुच्छेद 343 (3) के द्वारा सरकार ने यह शक्ति प्राप्त कर ली कि वह इस 15 वर्ष की अवधि के बाद भी अंग्रेजी का प्रयोग जारी रख सकती है। रही- सही कसर, बाद में राजभाषा अधिनियम, 1963 ने पूरी कर दी, क्योंकि इस अधिनियम ने सरकार

के इस उद्देश्य को साफ कर दिया कि अंग्रेजी की हुकूमत देश पर अनंत काल तक बनी रहेगी। संविधान में की गई व्यवस्था 343 (1) हिंदी के लिए वरदान थी। परंतु 343 (2) एवं 343 (3) की व्यवस्थाओं ने इस वरदान को अभिशाप में बदल दिया। समग्रता से देखें तो स्वतंत्रता संग्राम काल में हिंदी देश की राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक थी, अतः यह राष्ट्रभाषा बनी और राजभाषा अधिनियम 1963 के बाद यह केवल संपर्क भाषा होकर रह गई।

हिंदी का विशाल साहित्य एवं शब्द-भंडार अत्यंत विस्तृत है। हिंदी की देवनागरी लिपि अत्यंत सुगम, बोधगम्य एवं कलात्मक है। देवनागरी लिपि में अक्षरों पर लगने वाली शिरोरेखाएँ व मात्राएँ इसके सौंदर्य को चार चाँद लगा देती हैं। माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिलगेट्स का यह कथन वाकई हिंदी के सुनहरे भविष्य की ओर संकेत करता है कि जब बोलकर लिखने की तकनीक उन्नत हो जाएगी तो हिंदी अपनी वैज्ञानिकता और श्रेष्ठ लिपि के कारण सर्वाधिक सफल होगी। आज बोलकर लिखने की तकनीक विकसित हुई है, हिंदी को बोलकर आसानी से लिखा जा सकता है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि इसकी सबसे बड़ी विशेषता है इसको जैसा बोला जाता है वैसे ही लिखा भी जाता है। संस्कृत की तरह हिंदी पूरी तरह से ध्वनि और उच्चारण आधारित भाषा है। यह खूबी विश्व की अन्य किसी भी भाषा में नहीं है। लगभग सभी ध्वनियों को अभिव्यक्त करने व संप्रेषित करने की क्षमता हिंदी में है।

आज इस वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में हिंदी विश्व-स्तर पर एक प्रभावी भाषा बनकर उभरी है। हमारे देश में हिंदी बोलने व समझने वाले लोगों की संख्या 70 करोड़ से अधिक है। संसार के 200 से अधिक विश्वविद्यालयों





में हिंदी भाषा पढ़ाई जा रही है। आज हिंदी भाषा में ज्ञान-विज्ञान, आधुनिक, अभियांत्रिकी आदि विषयों तथा शब्द कोषों की निधि तथा पाठ्य-पुस्तकें तैयार हो चुकी हैं। सरल, सहज और सुगम भाषा होने के कारण हिंदी आज विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा की छह आधिकारिक भाषाएँ हैं। इनमें अरबी, चीनी (मैंडरिन), अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी और स्पेनिश शामिल हैं। इसके अलावा अंग्रेजी और फ्रेंच संयुक्त राष्ट्र सचिवालय की कामकाजी भाषाएँ हैं, लेकिन, अब इनमें हिंदी को भी शामिल किया गया है। इसका साफ मतलब यह है कि संयुक्त राष्ट्र के कामकाज, उसके उद्देश्यों की जानकारी यूनान की वेबसाइट पर अब हिंदी में भी उपलब्ध होगी। यह हिंदी बोलने वालों के लिए गौरव की बात है। अब हिंदी की गूँज संयुक्त राष्ट्र संघ में भी सुनाई देगी।

हिंदी अब केवल हिंद की ही भाषा नहीं रही, अपितु सुदूर फिजी से लेकर सूरीनाम, मॉरीशस से लेकर त्रिनिडाड, गुयाना, नेपाल आदि देशों में लोकप्रियता हासिल कर चुकी है। वहाँ की जनता हिंदी बोलती है। हिंदी भाषी देशों के अलावा अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड, जर्मनी, कनाडा आदि देशों में प्रवासी भारतीयों के कारण हिंदी अपना परचम लहरा रही है। वैश्विक मंच पर भारत की बढ़ती साख ने कई देशों को हिंदी जानने व समझने के लिए विवश कर दिया है। दुनिया में हिंदी की महत्ता दिनों दिन बढ़ रही है, इसका खुमार वैश्विक स्तर पर सिर चढ़कर बोल रहा है। देवनागरी लिपि के कारण हिंदी को इंटरनेट, सूचना प्रौद्योगिकी तथा जनसंचार के क्षेत्रों में

व्यापक लोकप्रियता मिली है। तेजी से बढ़ती हिंदी भाषा में वेबसाइटें इसके उज्वल भविष्य का संकेत हैं। हिंदी अब प्रौद्योगिकी के रथ पर सवार होकर विश्वव्यापी बन रही है।

हिंदी को विश्वव्यापी बनाने में मीडिया, टेलीविजन, सिनेमा, सोशल मीडिया आदि की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। परदे तथा चित्रपट संगीत ने हिंदी को विश्व की लोकप्रिय भाषा बनाया है। फिल्में, चित्रपट, छोटा-परदा, हिंदी गीत हिंदी के प्रचार-प्रसार का माध्यम बन रहे हैं। पूरे देश में उत्तर से लेकर दक्षिण और पूर्व से लेकर पश्चिम तक हिंदी गाने और सिनेमा लोकप्रिय हैं। दूरदराज मेघालय के चेरापूँजी में टैक्सी चालक हिंदी गाने बड़े चाव से गाता है तो सुंदर तमिलनाडु का मछुवारा बड़े शौक से हिंदी गाने सुनता है। यह और बात है कि दोनों ठीक से हिंदी बोल नहीं पाते, परंतु आनंद हिंदी गानों का ही उठाते हैं।

हिंदी अब रोजगार एवं तकनीक की भाषा बन चुकी है। तमाम बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपना व्यापार बढ़ाने के लिए हिंदी को बेहिक अपनानी जा रही हैं। अब अंग्रेजी का हौवा भी दिन-प्रतिदिन कम होता जा रहा है। व्यवसाय की दृष्टि से देखें तो विश्व में हिंदी बोलने वाले सर्वाधिक लोग हैं, जो एक बहुत बड़ा बाजार उपलब्ध करवाते हैं। विश्व को विशुद्ध बाजार के दबाव के चलते कारोबार, खेल, विज्ञान से जुड़ी जानकारीयों को हिंदी में परोसने पर विवश होना पड़ा है। ई-मेल, ई-कॉमर्स, ई-बुक, एसएमएस एवं वेब जगत में हिंदी की महत्ता को बड़ी सहजता से स्वीकार किया जाने लगा है। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, याहू, अलीबाबा तथा आरकेल जैसी विश्वस्तरीय कंपनियाँ अत्यंत व्यापक बाजार और भारी मुनाफे को देखते हुए हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दे रही हैं। वैश्विक स्तर पर भारत की बढ़ती साख ने कई देशों को हिंदी जानने समझने के लिए विवश कर दिया है। लिहाजा विदेशों में हिंदी की महत्ता दिनों दिन बढ़ रही है। निःसंदेह इससे हिंदी की समृद्धि का अहसास होता है। हिंदी भाषा मजबूत होकर उभर रही है।

इसलिए अब हम दावे के साथ कह सकते हैं कि हिंदी अब किसी संरक्षण की मोहताज नहीं है। हिंदी के अपने व्यावहारिक गुण हैं, इसकी वैज्ञानिक लिपि है, इसके पास समृद्ध साहित्य की खान है जिससे वह अपने विकास के लिए असंख्य संभावनाएँ खोज सकती है। हिंदी अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर विश्व में मंदारिन भाषा को पछाड़ते हुए पहले पद पर आसीन हुई है। अंग्रेजी लोग सीखते रहेंगे, परंतु हिंदी विश्व में नए आयाम स्थापित करती रहेगी, नवीन बुनदियों को छूती रहेगी। हिंदी विश्व में शीर्ष स्थान पर कायम रहेगी। हिंदी में वैश्विक भाषा बनने की क्षमता है। जैसे-जैसे प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी, हिंदी का वर्चस्व बढ़ता रहेगा।

सुरेश कुमार

हिंदी प्राध्यापक

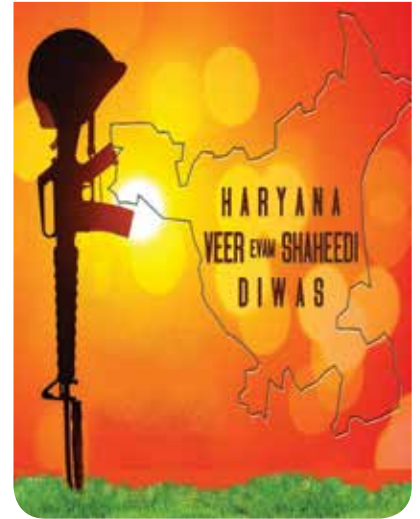
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मुर्तजापुर,

खंड- पहेवा, जिला- कुरुक्षेत्र, हरियाणा

2023

सितंबर माह के त्यौहार व विशेष दिवस

- 1 सितंबर- राष्ट्रीय पोषण सप्ताह
- 5 सितंबर - शिक्षक दिवस
- 6 सितंबर- जन्माष्टमी
- 8 सितंबर - अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस
- 11 सितंबर - विश्व प्राथमिक उपचार दिवस
- 14 सितंबर - हिंदी दिवस
- 15 सितंबर - इंजीनियरों का दिन
- 16 सितंबर - ओजोन दिवस
- 23 सितंबर- हरियाणा वार हीरोज शहीदी दिवस
- 27 सितंबर - विश्व पर्यटन दिवस
- 28 सितंबर- मिलाद-उन-नबी
- 29 सितंबर - विश्व हृदय दिवस



‘शिक्षा सारथी’ का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता- shikhsaarthi@gmail.com



Multilingualism in NEP-2020



Dr. Sunita Yadav



“After the NEP came, there has been much discussion on what will be the language of instruction. Here, we must understand one scientific fact language is the medium of education, not the entire education itself. People caught in too much of bookish knowledge often fail to grasp this distinction. Whatever language the child can learn easily in should be the medium of instruction.”

As stated by Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi ji, NEP 2020 will promote multilingualism in teaching and learning. It is well understood

that young children learn and grasp nontrivial concepts more quickly in their home language/mother tongue.

Teachers will be encouraged to use a bilingual approach, including bilingual teaching-learning materials, with those students whose home language may be different from the medium of instruction. All languages will be taught in an enjoyable and interactive style, with plenty of interactive conversation, and with early reading.

There will be a major effort from both the Central and State governments to invest in large numbers of language teachers in all regional languages around the country. Extensive use of technology will be made for teaching and learning different languages and to popularize language learning. The three-language formula will continue

to be implemented while keeping in mind the constitutional provisions, aspirations of the people, regions, and the union, and the need to promote multilingualism as well as national unity.

Multilingualism and the power of language

Children learn better in their native languages. Home language is usually the same language as the mother tongue or that which is spoken by local communities. However, at times in multi-lingual families, there can be a home language spoken by other family members which may sometimes be different from mother tongue or local language. Wherever possible, the medium of instruction until at least grade 5, but preferably till grade 8 and beyond, will be the home language/





mother tongue/local language/ regional language. Thereafter the home/local shall continue to be taught as a language wherever possible.

This will be followed by both public and private schools. High-quality textbooks, including science, will be made available in the home languages/ mother tongue. All efforts will be made early to ensure that any gaps that exist between the languages spoken by the child and the medium of teaching are bridged.

New Education Policy-2020(5+3+3+4)

The world is getting much more multilingual each year. Nowadays, people know many more languages with much more fluency than in the past. It is not a rare occurrence to have kids who speak a different mother tongue in our classroom. As such, we should take some time to check out what effects multilingualism has on the field of education.

Multilingualism and offering multi-disciplinary courses are the essence of



the NEP 2020. The old 10+2 system is being replaced with the 5+3+3+4 system. In the new millennium, many present unskilled jobs will be taken over by skilled manpower.

New demands created by the environment are: multi-disciplinary knowledge, and abilities across science, technology, social sciences, and

humanities. Persons with such exposure in such fields will be in high demand. The new requirements are creative thinking, and conceptual knowledge, thus NEP 2020 is aiming at achieving such goals.

Multilingual Education typically refers to "first-language-first" education, that is, schooling which begins in

NATIONAL EDUCATION POLICY 2020

2/2



Higher Education curriculum to have **Flexibility of Subjects**
Multiple Entry/Exit to be allowed with appropriate certification



Academic Bank of credits to be established to facilitate transfer of credits

NEP 2020 advocates increased use of **technology with equity**; National Educational Technology Forum to be created

National Research Foundation to be established to foster a strong research culture

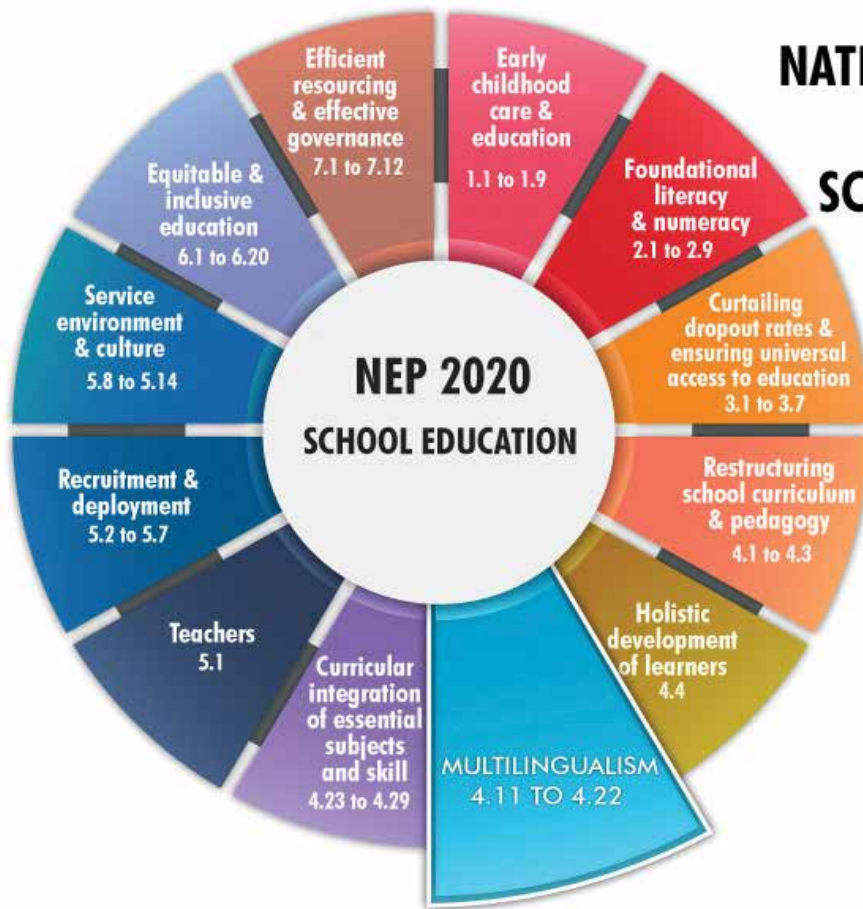
NEP 2020 emphasizes setting up of **Gender Inclusion Fund** and **Special Education Zones** for **disadvantaged regions and groups**

Affiliation System to be phased out in **15 years** with **graded autonomy** to colleges

National Institute for Pali, Persian and Prakrit, Indian Institute of Translation and Interpretation to be set up



NATIONAL EDUCATION POLICY 2020: SCHOOL EDUCATION



MULTILINGUALISM

the mother tongue and transitions to additional languages. Typically, MLE programs are situated in developing countries where speakers of minority languages tend to be disadvantaged in the mainstream education system. Multilingual education is a structured program of language learning and cognitive development providing-

A strong educational foundation in the first language

Successful bridging to one or more additional languages

Enabling the use of both/all languages for life-long learning.

This education is based on the child's own known environment and bridges to the wider world i.e., "Known to Unknown".

Mother tongue-based multilingual education is education, formal or non-formal, in which the learners' mother tongue and additional languages are used in the classroom. Learners begin their education in the language they understand best -their mother tongue- and develop a strong foundation in their mother language before adding additional language.

The purpose of a multilingual education program (MLEP) is to develop appropriate cognitive and reasoning skills enabling children to operate equally in different languages- starting in the mother tongue. Multilingual education promotes learners' integration into the national society without forcing them to

sacrifice their linguistic and cultural heritage.

The new three-language formula envisaged in the policy is not a new concept it is very much in practice since long, but provisions are kept here with much flexibility, that no language is imposed on any state, region or on students. A student or state is free to choose any two languages of native origin and a third language.

The policy is in line with UNESCO guideline to teach in home language, "at least six years of mother tongue education should be provided in ethnically diverse communities to ensure those speaking a different language from medium of instruction do not fall behind."





Benefits of multilingualism practices in education include the creation and appreciation of cultural awareness, adds academic and educational value, enhances creativity, adjustment in society and appreciation of local languages. Humans need an organized medium of communication in any given social set up.

The NEP 2020 has reconfigured the curriculum and pedagogy of school education to 5 + 3 + 3 + 4 design with an aim to make them responsive and relevant to the developmental needs and interests of learners at different stages of their development. However, it will not be necessary to make any parallel changes to the physical infrastructure. The policy aims at producing engaged, productive, and contributing citizens for building an equitable, inclusive, and plural society as envisaged by our Constitution.

Stages of Multilingual Education Program:

Stage1. Learning takes place entirely in the child's home language.

Stage2. Building fluency in the mother tongue. Introduction of oral fluency in a second language.

Stage3. Building oral fluency in the second language. Introduction of literacy in second languages.

Stage4. Using both first language and second language for lifelong learning

Role of teacher in multicultural classroom

Teacher plays the performance of each learner in the classroom is greatly influenced by their role. The performance of each learner in the classroom is greatly influenced by their role. pivotal role in the performance of each learner in the classroom, and this responsibility ascends to its peak in multicultural classrooms. A teacher with the utmost empathy, high sensitivity towards culture, broad-minded attitude, intense integrity, and



living the life of a person whom the learners can consider as a role model.

1. The teacher must be Multilingual too, and be able to explain and translate where the students do not understand with a few simple words.
2. Must be a good communicator in order to explain and guide the students that they could trust him/her, must know how to arrive straight to the point in order to be clear and precise.
3. Must be a good mediator and must know the culture of different countries and the specificity of their languages in order to not create problems but resolve them.
4. Be a good psychologist, must understand at first sight if the students follow him/her.
5. Be a good co-operator, make all the students cooperate to improve their skills in students.

Why do we need to promote multilingualism?

In today's global environment, there is a great need for multilingualism. It will help in personal growth, communication for business, Job

mobility, Study abroad, Increases in vocabulary and speech, and tolerance and respect towards other cultures.

Recommendations for NEP:

- » Multilingual education should be made a part of the education policy.
- » A series of studies are required to pilot the proposed system.
- » Instructions in the combination of homegrown languages.
- » In primary schools, all the knowledge should be provided to the pupils in their mother tongue with Hindi/ Urdu being a compulsory subject alongside other subjects.
- » Pre-service and in-service programs for teachers must sensitize them to the nature, structure and functions of languages, the process of language acquisition in children, language change, early literacy and equip them with tactics that can help build on the resources of a multilingualist classroom.
- » Publishers must be encouraged to publish print material in lesser-known minority/ regional/ tribal languages.

**Subject specialist
SCERT Gurugram (Haryana)**



Janmashtami: Celebrating the Birth of Lord Krishna



The divine birth of Lord Krishna occurred in a prison cell, where his parents were imprisoned by his evil uncle, King Kansa. It is believed that Lord Krishna's birth took place precisely at midnight. As soon as he was born, a series of miraculous events occurred: the prison doors flew open, and the guards fell into a deep slumber, allowing Vasudeva to escape with the infant Krishna to Gokul, where he was raised by his foster parents, Yashoda and Nanda.

Janmashtami Rituals and Traditions

Janmashtami is celebrated with great enthusiasm and devotion. The festivities often begin weeks before the actual day with elaborate preparations. Here are some of the key rituals and traditions associated with Janmashtami:

Fasting: Devotees fast on Janmashtami, abstaining from food and water until midnight. This

Janmashtami is one of the most significant and joyous festivals celebrated by Hindus worldwide. It commemorates the birth of Lord Krishna, who is considered the eighth avatar of Lord Vishnu. This auspicious day typically falls in the month of August or September, depending on the Hindu lunar calendar. Janmashtami is marked by a multitude of customs, rituals, and vibrant celebrations that showcase the rich cultural and spiritual heritage of India.

The Legend of Lord Krishna's Birth

The story of Lord Krishna's birth is a central theme in Janmashtami celebrations. According to Hindu mythology, Lord Krishna was born in the small town of Mathura to King Vasudeva and Queen Devaki. However, his birth was not ordinary.

It was a night of tumultuous rain and thunderstorms, which symbolize the chaos and darkness that prevailed in the world at that time.





symbolic fast represents the hardships faced by Lord Krishna's parents during his birth.

Krishna Temples: People visit Krishna temples and offer prayers and bhajans (devotional songs) to seek the blessings of Lord Krishna.

Dahi Handi: In Maharashtra and some other parts of India, a popular tradition called "Dahi Handi" is observed. It involves forming human pyramids to reach and break a pot filled with butter or curd, symbolizing Krishna's love for dairy products.

Swinging the Cradle: In homes and temples, a beautifully decorated cradle with an idol of baby Krishna is placed, and devotees take turns swinging it, depicting the nurturing aspect of Krishna's childhood.

Rasa Lila: In some regions, people enact scenes from Krishna's life through dance dramas called Rasa Lila. These performances showcase the divine love between Lord Krishna and his devotees.

Feasting: After the midnight birth of Lord Krishna, the fast is broken, and a grand feast is prepared. A variety of vegetarian dishes and sweets, especially those made of milk and butter, are served to mark the occasion.

The Significance of Janmashtami

Janmashtami holds immense spiritual and cultural significance for Hindus. Lord Krishna's life and teachings in the Bhagavad Gita continue to inspire people around the world. Here are some key aspects of its significance:

Divine Love: Krishna's love for his devotees and his enchanting childhood stories symbolize the divine love between God and humanity.

Dharma: The Bhagavad Gita, which is part of the Indian epic Mahabharata, contains Krishna's teachings on duty (dharma) and righteousness. It serves as a timeless guide for leading a virtuous life.



Festive Unity: Janmashtami transcends regional and cultural boundaries, bringing people of various backgrounds together to celebrate the birth of Lord Krishna. It promotes unity and harmony.

Renewal of Faith: For devotees, Janmashtami is an occasion to renew their faith and commitment to Lord Krishna's teachings and values.

Joy and Merriment: The lively celebrations, melodious bhajans, and cultural performances during Janmashtami bring joy and happiness to the lives of millions.

Janmashtami Around the World

While Janmashtami is most prominently celebrated in India, it has gained popularity in many countries due to the Indian diaspora. Cities with a significant Indian population often witness grand Janmashtami celebrations, complete with processions, cultural programs, and elaborate decorations.

In countries like the United States, the United Kingdom, Canada, and

Australia, Janmashtami events draw large crowds, with people from diverse backgrounds coming together to experience the rich traditions of India.

Conclusion

Janmashtami is a festival that not only celebrates the birth of Lord Krishna but also represents the triumph of good over evil, the importance of duty and righteousness, and the power of divine love. It brings people of different cultures and backgrounds together to rejoice in the joyous festivities, making it a vibrant and cherished tradition that continues to thrive in India and around the world.

As devotees fast, pray, and participate in various customs, they find solace and inspiration in the life and teachings of Lord Krishna, whose eternal message of love, compassion, and righteousness continues to guide and inspire generations. Janmashtami stands as a testament to the enduring relevance of these timeless ideals in our ever-changing world.

Sourced from net





Ganesh Chaturthi: The Festival of Lord Ganesha



Ganesh Chaturthi, also known as Vinayaka Chaturthi, is one of the most widely celebrated festivals in India. This grand and joyous festival is dedicated to Lord Ganesha, the elephant-headed God of wisdom, prosperity, and new beginnings. The celebration of Ganesh Chaturthi spans ten days, and it holds a special place in the hearts of millions of Indians across the world. In this essay, we will delve into the history, significance, rituals, and environmental concerns associated with Ganesh Chaturthi.

Historical Origins: The roots of Ganesh Chaturthi can be traced back to ancient India. While the exact origin of the festival is debated, it is believed to have started during the reign of the

Maratha ruler, Chhatrapati Shivaji Maharaj, in the 17th century. However, it gained widespread popularity during the British Raj as a form of public celebration against colonial rule.

Significance of Ganesh Chaturthi: Ganesh Chaturthi is celebrated with great fervor for various reasons:

Lord of Beginnings: Lord Ganesha is revered as the remover of obstacles and the harbinger of success and wisdom. Devotees seek his blessings at the commencement of new ventures and endeavors.

Unity and Togetherness: The festival brings people from diverse backgrounds together, fostering a sense of unity and communal harmony.

Cultural Significance: Ganesh

Chaturthi is an integral part of Indian culture. It celebrates the rich mythological and spiritual heritage of the country.

Rituals and Traditions: Ganesh Chaturthi is marked by elaborate rituals and traditions, which vary from region to region. However, some common practices include:

Idol Installation: Devotees install elaborately crafted idols of Lord Ganesha in their homes and community pandals (temporary shrines). These idols are made from clay and decorated with vibrant colors and ornaments.

Prayers and Offerings: Daily prayers, devotional songs, and bhajans are performed in front of the idol. Offerings like modak (a sweet dumpling), coconut, and flowers are made to Lord Ganesha.

Visarjan (Immersion): On the final day of the festival, the idol is taken in a grand procession through the streets, accompanied by music and dance. It is then immersed in a water body, symbolizing the return of Lord Ganesha to his celestial abode.

Community Involvement: Ganesh Chaturthi is not just a family affair; it involves the entire community. Many communities compete to create the most elaborate pandals and idols, fostering a spirit of healthy competition and creativity.

Environmental Concerns: While Ganesh Chaturthi is a time of joy and celebration, it also poses certain environmental challenges:

Immersion of Idols: The immersion of idols, often made of non-





biodegradable materials like plaster of Paris and coated with toxic paints, can lead to water pollution. Efforts have been made to promote eco-friendly idols made from clay and natural colors.

Noise and Air Pollution: The use of loudspeakers and firecrackers during the festival can contribute to noise and air pollution, adversely affecting the environment and public health.

Waste Generation: The festival generates a significant amount of waste, including food leftovers and decorations. Proper waste management is essential to mitigate this issue.

Modern Adaptations: In recent years, there has been a growing awareness of the environmental impact of Ganesh Chaturthi. Many individuals and communities have started adopting eco-friendly practices, such as using clay idols and minimizing the use of plastic decorations. Additionally, some people choose to celebrate the festival in a more subdued and eco-conscious manner.

Conclusion: Ganesh Chaturthi is not just a religious festival but a cultural extravaganza that brings people together to celebrate the spirit of unity, creativity, and devotion. It is a time to seek the blessings of Lord Ganesha and embark on new journeys with optimism and determination.

As we celebrate Ganesh Chaturthi, it is essential to strike a balance between tradition and environmental responsibility. By embracing eco-friendly practices and promoting awareness, we can ensure that this beloved festival continues to thrive for generations to come, without harming the environment. Ganesh Chaturthi exemplifies the resilience of tradition in the face of modern challenges, and it serves as a reminder of the cultural richness and diversity of India.

Sourced from net



The Edge of Tomorrow

Meet me at the edge of tomorrow.
Before a new day blinks it's way in.
Let's dance a timeless twilight sonata,
And throw future worries to the winds.

Let's not fret about tomorrow,
Just live in this beautiful moment.
All I want is you here and now.
Let's pause life's constant torrents.

We don't know if the sun will come out.
Why wait for unreliable tomorrow?
Where clouds may cast shadows of doubt.
Why time from another day borrow?

Suppose we had only this one day, today.
We wouldn't wait for tomorrow to come.
We would truly live life fully our way.
Till our souls became timeless and one.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisinh@gmail.com





Over the Rainbow

Dr. Deviyani Singh



She stood in the balcony looking at the rapidly plummeting sun. Things in her life had also been sinking at a similar rate. How she longed for someone or something to comfort her in these trying times. The shrill of the doorbell pierced through her reverie. She opened the door...

"Kaun hai?" Her voice echoed in the empty corridor.

"Those damn neighbours' kids, pranking me again." Aditi slammed the door, venting her rage on it like a thundercloud, making the fine bevelled glass panel rattle.

Then she heard a melodic call and short, staccato knocks. The doorbell screeched like a discordant violin. She was startled to see a hummingbird

pecking away on it.

"Those spoiled 'jungli' brats must've smeared the doorbell with their sticky hands, dripping with 'jalebi' juice."

The bird hovered right before her nose, its eyes shimmering.

"You're sad?" A high-pitched trill, but the words were discernible.

She rubbed her eyes in disbelief as it

perched on her hand.

"Only parrots can mimic human words; what are you?" Her voice trembled.

"Let's go inside." The mesmerising trill wafted off the walls of her posh flat in Versova, Bombay.

Her heart was pounding; she collapsed on the sofa.





"Don't do it." The pitch was lower now.

"What?"

"You were planning to jump off the balcony.

Plummet like the setting sun."

She was speechless; that's exactly what she had contemplated. The sun symbolised her despair, like a bad bronze coin that dipped into the dark, tattered pockets of her nightmares. A solitary, salty tear ran down her cheek and plopped onto the tiny bird.

It bobbed its head. "Bring that pocket watch, the family heirloom your father gave you."



She followed its command as if in a trance and laid the vintage gold watch with a cobalt blue dial on the coffee table."

"Wind it forward and stop at midnight."

She gingerly wound the watch; her gaze transfixed on the hummingbird. Legend has it that hummingbirds are a symbol of hope and able to float free of time. Their wings move in an infinity pattern.

"You can call me Advaya. Now tell me every little detail of what tortures your mind," he chimed.

It felt strange to tell a bird all she



had undergone, but her tongue began moving as fast as the hummingbird's wings. It was a cathartic balm for her wounded heart.

A month ago, her husband had declared with a sheepish smile,

"I'm in love."

"I know." She blushed.

"No, with my secretary."

His icy avalanche of indifference blindsided her. His head was so far up his rear that he couldn't even see the pain he was causing her. It was like burning coals were forced down her throat.

"I'd never known pain could permeate all my senses. I could smell betrayal in his 'gifted' cologne. I could see its colours: black as hell outside and raw red inside, skin charred, exposed flesh hanging, like a burn victim. I could hear it in his constant messages to her back and forth, the notifications set sickeningly to the chirp of love birds. He bought fancy designer underwear and bolted out of the door to 'work late', car tyres screeching as he sped out of the driveway. I felt my heart being dragged along the road. Then came the news that they had died in a car crash. I didn't know whether to be relieved or grieve. I felt like a rusted, jagged sword

had been permanently embedded in my heart, leaving a metallic taste. I lost the will to live."

Advaya's pupils dilated: "Ah! the terrible trauma of unrequited love! The watch is ready; close your eyes and picture yourself at the edge of a rainbow."

Aditi shut her eyes and saw the bird's iridescent plumage blend in





Story

like a darting rainbow. She saw the plummeting sun and followed its path as it dipped into the sea. They sank for some time and went right through the bottom into a strange gel-like substance, through which they moved in slow motion. They sprang from the firmament into outer space and rode the galactic carousel of the Milky Way, passing through various dimensions with each rotation. They rang rings around Saturn and sailed past thousands of galaxies. They approached a planet that was bathed in the luminescence of a hundred moons and landed in a lush green meadow. The air smelled of fresh green apples. They walked along a small brook with crystal-clear glacial water. Colourful pebbles were visible under the glassy waters. Rhododendron trees lined the path, strewn with a bed of magenta flowers. A startled bevy of golden pheasants cackled and flew past. Bounding towards them was her German Shepherd, who had lived for thirteen years and left them on Valentine's Day. He covered her with

sloppy kisses.

"But how can this be? Simba died; I buried him beside the river..."

A few steps along the way, lying in a hammock, was a familiar figure. He stood up, and she ran straight into his arms.

"Dad? How come? Where am I? Am I dead too?" She asked Advaya.

"No, you're not dead yet. The souls you see here

have been given genetically enhanced bodies in this parallel universe. Stay here; I will return."

"Everyone is immortal, there are no ups and downs, we exist in a linear pattern here." Dad explained.

"The landscape is so unchanging; the weather never changes either?"

Dad nodded, "No reproduction, as no one dies. No competition, and an endless supply of land, food etc."

"Then there mustn't be much to do? No conflicts and no stories either." Aditi's initial fascination with this alternate reality was wearing thin.

Then she saw her husband cavorting





"I choose this life. Thank you for showing me how to live past bitter experiences and taste only the sweet nectar of life like you do."

The balcony was now her haven, bridging realms. As the sky was painted in hues of gold and orange, she could see magic in burnished sunsets. The allure of a perfect life faded as she yearned for the messy beauty of this one, with its challenges. She clutched the pocket watch to her heart, knowing it would be her compass to guide her through the labyrinth of life.

The hummingbird pecked her cheek, hovered in the moment, and vanished into the evening twilight.

Disclaimer - This is a work of fiction. Names, characters, events and incidents are the products of the author's imagination. There is no malice intended towards any beliefs or religion. Any resemblance to actual persons, living or dead, or actual events is purely coincidental.

(This story has won 2nd prize at the Chandigarh Literary Society's Annual Short Story Competition 2023)

around with his secretary. In contrast to the thrill of the forbidden fruit of their fling on Earth, they looked bored here.

He fell at her feet, "Forgive me, please; let's get back together."

After a week, Advaya returned, "It's time."

Aditi bid farewell to her father and Simba. They floated in the stream that led to a bioluminescent sea; colourful jellyfish swirled around them, and after an enchanting journey, she found herself on her balcony again.

Aditi asked Advaya, "Was it a paracosm?"

"I am real, but enhanced too. Your father sensed your grief and sent me. At the end of their lives on Earth, souls are given the choice of living forever in the same body in another realm or being reborn on Earth. You will be surprised

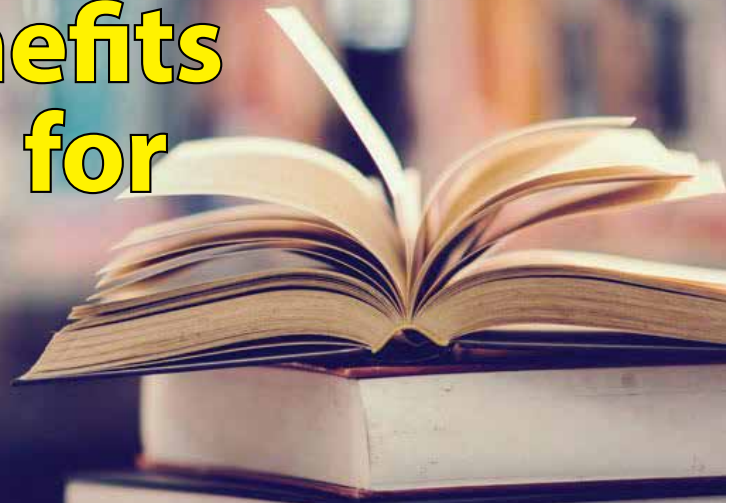
to know that not many choose immortality. What will you choose?"

devyanisingh@gmail.com





Top 10 Benefits of Reading for All Ages



Calling book lovers and avid readers of all ages! Have you ever wondered what the benefits of reading are aside from leisure and education? From learning new words to maintaining your mental health, books can do it all! In case you needed a reminder of how important regular reading is for our wellbeing and literacy, here are the top 10 benefits of reading for all ages:

1. Reading Exercises the Brain

While reading, we have to remember different characters and settings that belong to a given story. Even if you enjoy reading a book in one sitting, you have to remember the details throughout the time you take to read the book. Therefore, reading is a workout for your brain that improves memory function.

2. Reading is a Form of (free) Entertainment

Did you know that most of the popular TV shows and movies are based on books? So why not indulge in the original form of entertainment by immersing yourself in reading. Most importantly, it's free with your Markham Public Library card.

3. Reading Improves Concentration and the Ability to Focus

We can all agree that reading cannot happen without focus and in order to

fully understand the story, we have to concentrate on each page that we read. In a world where gadgets are only getting faster and shortening our attention span, we need to constantly practice concentration and focus. Reading is one of the few activities that requires your undivided attention, therefore, improving your ability to concentrate.

4. Reading Improves Literacy

Have you ever read a book where you came across an unfamiliar word? Books have the power to improve your vocabulary by introducing you to new words. The more you read, the more your vocabulary grows, along with your ability to effectively communicate. Additionally, reading improves writing skills by helping the reader understand and learn different writing styles.

5. Reading Improves Sleep

By creating a bedtime routine that includes reading, you can

signal to your body that it is time to sleep. Now, more than ever, we rely on increased screen time to get through the day. Therefore, by setting your phone aside and picking up a book, you are telling your brain that it is time to quiet down. Moreover, since reading helps you de-stress, doing so right before bed helps calm your mind and anxiety and improve the quality of sleep.





6. Reading Increases General Knowledge

Books are always filled with fun and interesting facts. Whether you read fiction or non-fictions, books have the ability to provide us with information we would've otherwise not known. Reading a variety of topics can make you a more knowledgeable person, in turn improving your conversation skills.

7. Reading is Motivational

By reading books about protagonists who have overcome challenges, we are oftentimes encouraged to do the same. The right book can motivate you to never give up and stay positive, regardless of whether it's a romance novel or a self-help book.

8. Reading Reduces Stress

Reading has the power to transport you to another world and away from the monotonous daily routine. By doing so, reading can decrease stress, lower heart rate and reduce blood pressure.

9. Reading Sets a Positive Example

Reading is a key component of early literacy development and you can set an example of just how crucial this is by modeling the behaviour yourself. Children are excellent at mimicking the adults around them which means that if you regularly set aside some "me time" for reading, your children will learn to do the same.

10. Reading Teaches Empathy

Books allow us to experience realities outside of our lives. They teach us to relate to others by often putting us in the shoes of the narrator. This simple technique is called empathy. Empathy is defined as the ability to understand and share the feelings of another. Reading builds on empathy by constantly presenting us with thoughts and scenarios outside of our perspective.

Sourced from net

52 Yards in a Box



In my Grandma's old 'Haveli',
There was a box of Mahogany.
Tucked away in a loft from prying eyes,
Encasing precious, sweet memories.
Sepia photographs in moldy albums,
Of my Mother's childhood shenanigans.

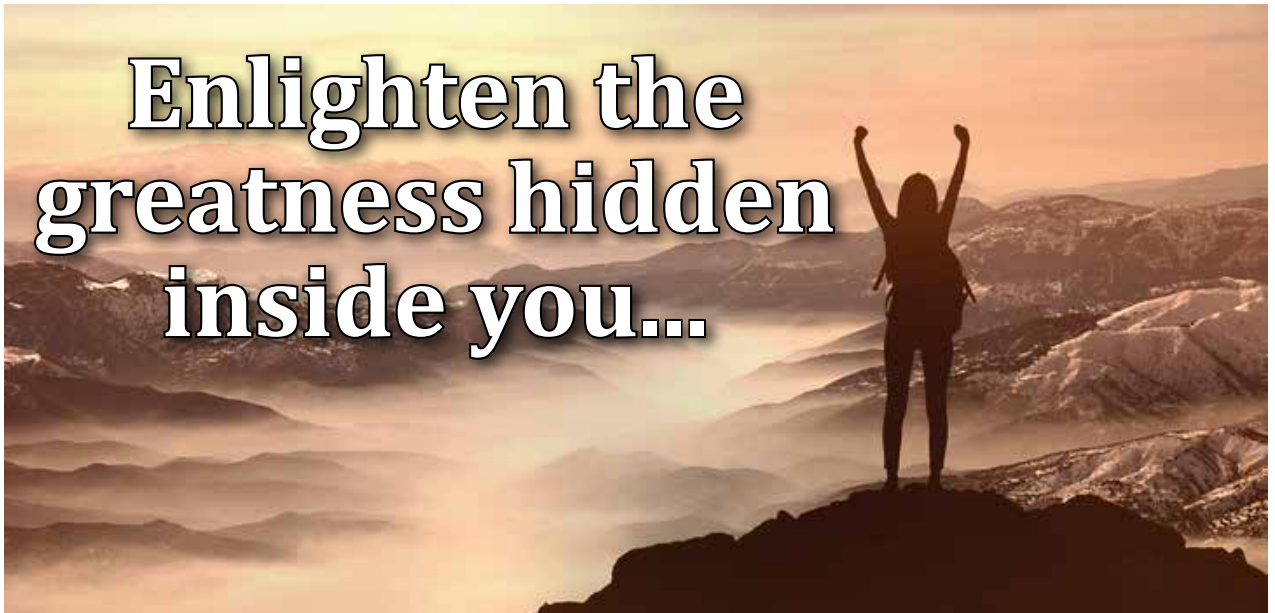
On Grandma's arms, firm yet wrinkled,
Fine silver trinkets and amulets tinkled.
Veins of gossamer and translucent skin,
Holding so many enchanting stories within.
She gesticulated telling folklores of yore,
Sitting in the 'aangan' around a roaring bonfire.
Force feeding us delectable 'laddoos' of 'choorma',
And hot rotis dripping with 'ghee' and sweet 'bura'.

Now in the box, her old Haryanvi 'ghaghra' lies,
Along with the fineries which she so prized.
All 52 yards of bright magenta; defying it's age.
The huge 'daman' with great dexterity was made.
Took a sturdy waist to carry its weight,
Left red welts on mine to carry its grace.

Many moons passed and Grandma is gone,
And all is left is that antique box, forlorn.
Where memories carefully encased remain,
Stored safely away from the wind and rain.
Hidden from the extracting cruel hands of time,
But forever, lovingly imprinted in my mind's eye.

-Dr. Deviyani Singh
devyanisingh@gmail.com





Dr. Himanshu Garg



Man is the maker of his destiny. Are great men born or are they created? To become great it is not necessary that you be a member of a rich or royal family. All you need is to have determination to succeed and do something which the world will follow and remember you for the rest of time.

Once there was a loving couple living in a village. They had a son who was in foreign country. He sent money for his parents. The couple was very kind and helpful. As time passed, the old man began planting trees and his wife began watering those trees. They served the entire village with their work. They planted a number of trees providing shade and edible items like fruits and vegetables. The villagers were often surprised why they were planting trees when they would not live to see the trees grow. They replied, "We are planting for our future generations".

Soon the old lady died. After her death, the old man was bed ridden but he had all the villagers who were ready to look after him. Unable to bear the loss of his beloved wife, the old man also died. The whole village mourned the death of the two great people. A woman took the old woman as the role model and began watering trees of the village. Many men of that village also followed what the old man had done. The village became a very shady place with a lot of fruit trees. Soon the whole village became a mini forest and a cool



place where villagers can easily grow crops. It appeared as a little paradise on earth. The village became a visiting place for weekends. The villagers constructed a huge memorial in the memory of that couple for the travelers and a stone with their name placed on the entrance of the village. Every person of that village remembered and gave respect to both of them. The place which was dry and barren got an amazing look because of that couple.

A simple question arises in my mind. The question is- What makes an ordinary person great? Do you know the answer? Turn the pages of history. You will get the answer that great people never know that they would become great some day. Their great job made them so. When any person whether he is rich or poor, healthy or sick, male or female, married or unmarried, serves society, the person becomes great. Becoming a great person is a virtue which is given to all.

**Asstt. Professor(Comp. Sci.)
Govt. College for Women, Jind
Himanshujind@yahoo.com**





Visit to Agastya Foundation, Kuppam, Bangalore



Archana Arora



SCERT and DSE Haryana had organized a visit for best 120 participants of sciences from all over Haryana to Agastya Foundation and Innovation Hub, Kuppam, Bangalore under the leadership of Ms. Bindu and Ms. Sheetal (as volunteers), flagged off by director SCERT through same platform Nizamuddin Railway Station New Delhi in July 2023. This was a great step ahead by our senior officials which empowered and encouraged our teachers (including me) to teach creatively with an objective to understand and practice learning by doing.

Agastya's teacher training workshops introduced government school teachers to experiential and hands on teaching learning approaches and strategies in science and mathematics education. I believe it was the best step forward

by the senior authorities for upgrading our science faculties across Haryana.

The low cost science models developed and the training by Agastya definitely stimulate thinking in children and help in demystifying science concepts. Their workshops provide a space for teachers to think of creative ways to engage children and sustain curiosity. In the 4 days training programme teachers:-

- » Participate in a variety of hands on activities in context of their school science syllabus, followed by discussions and reflections.
- » Prepare lesson plans according to the constructivist approach and using the 5E (Engage, explore, express, expand, evaluate) model.

If we talk about learning process. It is important to bear in mind that students learn when they are actively engaged and have freedom to explore. Therefore, encourage children to discover things on their own. By asking them to make working models by providing them opportunities to create their own activities by encouraging peer learning and giving support when

needed. Agastya has helped our teachers to train in these methodologies. In a nutshell, they teach us

1. Student have multiple ways of learning. A teacher who can connect with young minds can bring about a change.
2. As knowledge is ever changing and ever growing, teachers have to constantly learn and adapt.
3. Teachers have to take up the role of facilitators and strive to create a classroom atmosphere that is stress-free, open, and where students have ownership of their learning.
4. There needs to be a supportive relationship between teachers and students. If a teacher can connect with students emotionally, and is able to understand their practical problems; it can help build student confidence.

Agastya foundation explained us the role of scientific methodology in the construction of knowledge with their innovative and creative ideas through their low-cost models.

PGT – Chemistry
GSSS Nathupur, Gurugram





Amazing Facts



1. **There are 122 pebbles per square inch on a Spalding basketball.**
2. Canada is an Indian word meaning "village" or "settlement."
3. The seventeenth president of the United States, Andrew Johnson did not know how to read until he was 17 years old.
4. The fastest growing tissue in the human body is hair.
5. Bhutan issued a stamp in 1973 that looked like a record and actually would play the Bhutanese national anthem if placed on a record player.
6. Asparagus comes in three colors: green, white and purple.
7. Only two people signed the Declaration of Independence on July 4th, John Hancock and Charles Thomson. Most of the rest signed on August 2, but the last signature wasn't added until 5 years later.

8. A cubic yard of air weighs about 2 pounds at sea level.
9. Pancakes are served for breakfast, lunch and dinner in Australia.
10. A lion feeds once every three to four days.
11. The most deadly fires that occur in the home happen between 6pm and 10pm.
12. There are over 200 parts in a typical telephone.
13. There is an automobile model called Stutz Bearcat.
14. If you were standing on Mercury, the Sun would appear 2.5 times larger than it appears from Earth.
15. The water inside of a coconut is identical to human blood plasma. Many lives in third world countries have been saved from coconut water fed through an IV.
16. Little Miss Muffet was a girl from the 16th century whose name was really Patience.
17. Majority of brides plan their wedding for approximately 7 to 12 months.
18. The word assassination was invented by William Shakespeare.
19. Benjamin Franklin invented the rocking chair.
20. Persia changed its name to Iran in 1935.
21. In the wild, the poinsettia flower can reach a height of 12 feet, and have leaves that are eight inches across.
22. Construction workers hard hats were first invented and used in the building of the Hoover Dam in 1933.
23. A study indicates that smokers are likely to die on average six and a half years earlier than non-smokers.
24. Teflon is the slipperiest substance in the world.
25. The lifespan of a firefly is about seven days. During these days, they are busy trying to find a mate.
26. A crocodile can run up to a speed of 11 miles per hour.
27. In one day, adult lungs move about 10,000 liters of air.
28. Cows do not have any upper front teeth. Instead they have a thick pad on the top jaw.
29. Energy is being wasted if a toaster is left plugged in after use.
30. The strongest muscle in the body is the tongue.

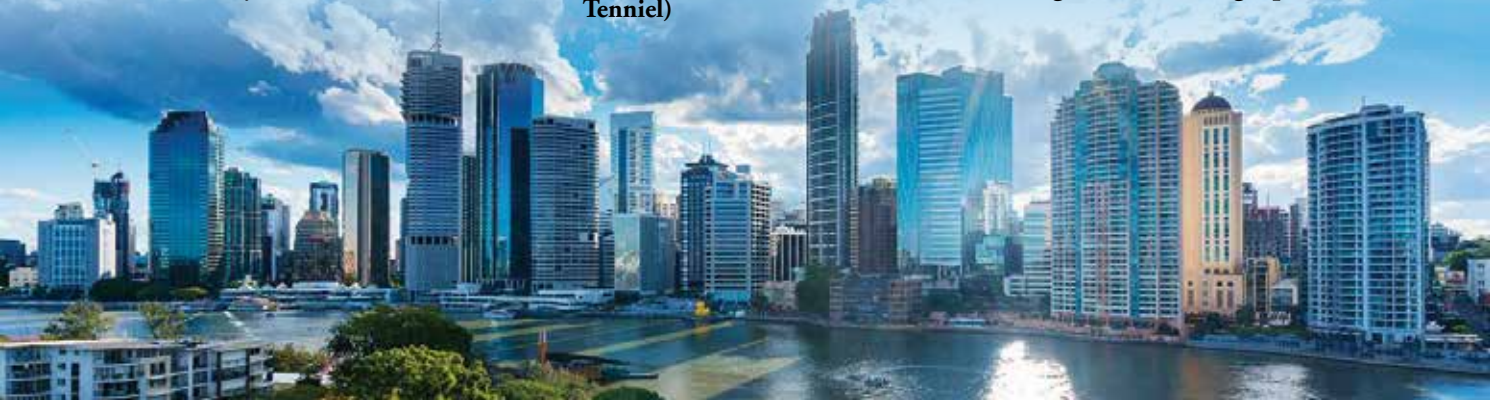
<https://greatfacts.com/>





1. What is the state capital of Queensland, Australia? **Brisbane**
2. The novel A Scandal in Bohemia features which fictional detective? **Sherlock Holmes**
3. Natasha Khan is better known by what name? **Bat for Lashes**
4. What is the name of the UK Guardian newspaper 'midi' size format (470×315mm)? **Berliner**
5. P is the symbol for which chemical element? **Phosphorus**
6. Benjamin Disraeli entered the House of Lords in 1876 with the title 1st Earl of where? **Beaconsfield**
7. The Copenhagen Criteria define eligibility for national membership of what organisation? **The European Union**
8. What is the Irish finger ring, comprising two hands, a heart and crown, worn to indicate romantic status? **Claddagh**
9. What is the grammatical term for words such as at, in, of, to, by, under, and with? **Preposition**
10. Peter Yarrow was a member of which 1960s folk trio? **Peter, Paul and Mary**
11. Acrophobia is a fear of what? **Heights**
12. Idiot Box is a derogatory term for what? **A television**
13. Which city hosts the headquarters of the International Red Cross and Red Crescent Movement? **Geneva**
14. What country forms the Easterly edge of the Horn of Africa? **The Republic of Somalia**
15. William Rufus was the nickname of which English monarch? **William the Second**
16. What is the Christian festival, meaning 'fiftieth day', celebrated on Whit Sunday? **Pentecost**
17. What is Edward Hopper's famous night-time painting of customers in an American diner? **Nighthawks**
18. On which island did Noel Coward spend the last 23 years of his life? **Jamaica**
19. How many musical notes are in a hexachord? **Six**
20. Who illustrated Lewis Carroll's Alice's Adventures in Wonderland and Through the Looking Glass? **John Tenniel (later Sir John Tenniel)**
21. A Hoosier is a native of which American state? **Indiana**
22. What is the highest rank of officer in the RAF? **Marshall of the Royal Air Force**
23. What is the surname of Eddie played by Adrian Edmondson in the UK TV series Bottom? **Hitler**
24. Madame du Barry was the mistress of which King of France? **Louis the Fifteenth**
25. What famous battle began with the English on Senlac Hill? **The Battle of Hastings**
26. Fingernails and toenails are made of what protein? **Keratin**
27. What British term equates to the American 'quarter-note' in music? **Crotchet**
28. What metal, safely used in food colouring, has the E-Number 175? **Gold**
29. Almeria, Merlot, and Waltham Cross are which fruit? **Grapes**
30. What three-letter Latin term used commonly in English translated literally as 'road' or 'way'? **Via**

<https://www.businessballs.com/general-knowledge-quizzes-1/>



आदरणीय संपादक महोदय!
सादर अभिनंदन।

आपके यशस्वी मार्ग निर्देशन में संपादित हो रही शिक्षा विभाग हरियाणा की मासिक पत्रिका 'शिक्षासारथी' का अंक (अगस्त- 2023) पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ को देखते ही आगे की सामग्री पढ़ने के लिए मन आतुर हो उठा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 को समर्पित यह अंक अपने आप में निराला है। सर्वप्रथम माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने बताया कि हमारा देश भारत, विश्व का सिरमौर बनने जा रहा है। वास्तव में यदि किसी देश को उन्नति के शिखर को छूना है, तो उसे अपनी शिक्षा नीति को सुदृढ़ बनाना होगा। इसीलिए भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 को लागू करने की अनुशंसा व्यक्त की गई। एनईपी में आरंभिक कक्षाओं से ही विद्यार्थियों को वोकेशनल एक्सपोजर देने से युवा अपनी जिंदगी को बेहतर तरीके से जीने के लिए तैयार हो जाएंगे। हरियाणा प्रदेश ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 को सन् 2025 तक पूर्ण रूप से लागू करने की ठानी है। इस प्रकार से हमारा राज्य हरियाणा राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने वाला, देश का सबसे प्रथम राज्य बन जाएगा। मनोज कौशिक जी ने अपने आलेख में एनईपी के सभी मुख्य पहलुओं को बहुत सुन्दर तरीके से समझाया है। इस प्रकार के मुख्य बिंदुओं के बारे में पढ़ना हम सबके लिए नितांत आवश्यक है। गणित प्रवक्ता राजकुमार सुथार के आलेख 'शिक्षण को सरल बनाना एक अनूठा गणित पार्क' वास्तव में प्रेरणादायी रहा। अन्य विद्यालयों को भी इस प्रकार का कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। हर बार की तरह दर्शन लाल बावेजा का 'खेल-खेल में विज्ञान' एक अद्भुत, ज्ञानवर्धक जानकारी के साथ प्रस्तुत किया गया। उपनिदेशक मौलिक शिक्षा विभाग हरियाणा, इंद्रा बेनीवाल जी के आलेख, 'युवा-पीढ़ी को पढ़ाना होगा नैतिकता का पाठ' वास्तव में समाज के बदलते परिवेश को देखते हुए सटीक आलेख लगा। आधुनिकता की दौड़ में पथभ्रष्ट हुए अपने युवाओं के लिए हमें सही मार्ग प्रशस्त करना होगा। सच कहूँ तो 'शिक्षा सारथी' अगस्त 2023 के सभी आलेख अपने आप में ज्ञानवर्धक जानकारी लिए हुए हैं। अंत में मैं संपूर्ण संपादन-मंडल को हार्दिक बधाई देती हूँ।

नीलम देवी

प्रवक्ता संस्कृत

स्व.से.चौ.ज.रावमावि गिगनाऊ

खंड-लोहारु, जिला-भिवानी, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय!
सादर नमन।

अगस्त अंक पढ़ने का अवसर मिला। राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर केंद्रित यह अंक काफी नयी जानकारियों से युक्त था। इस नीति को लेकर माननीय प्रधानमंत्री, माननीय केंद्रीय शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रियों के साथ प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री व माननीय शिक्षा मंत्री महोदय के विचार पढ़ने को मिले। जब प्रधानमंत्री कहते हैं कि हमें भविष्य पर नज़र रखनी होगी, हमें प्यूचरिस्टिक माइंडसेट के साथ सोचना होगा, हमें बच्चों को किताबों के दबाव से मुक्त करना होगा, तो इन तमाम बातों से पता चलता है कि शिक्षा विकास के विषय में उनका दृष्टिकोण दूरदर्शिता से भरा हुआ है। श्री प्रमोद कुमार का लेख 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति : पुरातन तथा नवीन भारत का समावेश' बहुत पसंद आया। श्री मनोज कौशिक ने अपने लेख में बताया कि नयी शिक्षा नीति के साथ हरियाणा के स्कूल किस प्रकार बदलाव के लिए तैयार हैं। डॉ. ऋषि गोयल ने 'केजी टू पीजी अवधारणा' का वास्तविक अर्थ समझाया। कुल मिलाकर सारा अंक बेहद ज्ञानवर्धक था। 'शिक्षा सारथी' की पूरी टीम को बधाई। सतत सफलता हेतु मंगल कामनाएँ।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

117, आदिलनगर, विकासनगर

लखनऊ-226022



आन, बान और शान तिरंगा

आन बान और शान तिरंगा
भारत माँ की जान तिरंगा
आओ कीर्ति पताका लहराएँ
हर भारतीय का सिरमौर
विमल यश गौरव की भोर
आओ देशभक्ति के भाव जगाएँ
फौलादी हाथों के जौहर का दम
ये है आज़ादी का परचम
आओ मस्तक पर तिलक लगाएँ
चढ़ा गए निज शीश बलिदानी
लुटाई वीर बाँकुरों ने अलमस्त जवानी
आओ राष्ट्रीय गौरव गाएँ
वैभव इसका बढ़ता जाए
यह कभी झुकने न पाए
आओ मिलकर प्रण उठाएँ
इस पर सदा हो तन-मन अर्पण
बल पौरुष निज शीश समर्पण
आओ घर-घर अलख जगाएँ

धर्म सिंह गहली
प्रवक्ता रसायन विज्ञान
रावमा विद्यालय जैलाफ
जिला-महेन्द्रगढ़, हरियाणा



सबसे प्यारी हिन्दी भाषा

सबसे प्यारी हिन्दी भाषा,
हम सबकी अभिलाषा है।
सद्भाव जगाती सबके मन में,
ऐसी सुंदर भाषा है।

एक डोर में बाँधे सबको,
ऐसी हिन्दी भाषा है।
वर्ग-भेद को खत्म करे,
वह अपनी हिन्दी भाषा है।

सब भाषाओं से प्यारी है,
ये सबको गले लगाती है।
भाषा सारी खुश होकर,
इसमें घुल-मिल जाती है।

जैसा लिखते वैसा पढ़ते,
हम सबको यह प्यारी है।
हिन्दी अपनी मातृभाषा,
सब भाषाओं से न्यारी है।

अ अनपढ़ से शुरू होकर,
ज्ञ से ज्ञानी सबको बनाती।

भूल गए जो नादानी में,
उनको ये संस्कार सिखाती।

दादा-दादी, नाना-नानी,
कहानी सुनाते हिन्दी में।
अपने पूर्वजों से हम पाते,
सम्पूर्ण ज्ञान हिन्दी में।

जनमानस की भाषा है ये,
सबका मान बढ़ाती है।
प्रेम, करुणा की भाषा ये,
सब में प्यार जगाती है।

आओ मिलकर गान करें,
हिन्दी की जयकार हम।
हिन्दी को अपनाकर सब,
इसका मान बढ़ाएँ हम।

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
सरय अलावर्दी
गुरुग्राम, हरियाणा